मूल्य: 20/–

(कला–संस्कृति और सामाजिक चेतना का स्वर)

बोलो जिंदगी

वर्ष–1, अंक: – 4 जुलाई, 2024

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक

कुश्ती और फिल्में देखने का शौक था : स्व. रामसुंदर दास, भूतपूर्व मुख्यमंत्री, बिहार

वो मेरी पहली शूटिंग : आनंद मोहन पांडेय, भोजपुरी गायक एवं हास्य अभिनेता

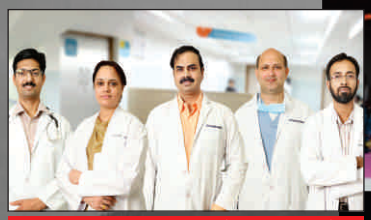

भारतीय डॉक्टर्स का योगदान इंग्लैंड की मेडिकल संस्थाओं में

तीसरी कसम फेम गीतकार शैलेन्द्र का भोजपुरी कनेक्शन

17 साल बाद फिर टी 20 वर्ल्ड चैम्पियन बना भारत

RNI No.: BIHHIN/2023/86004

बोलो जिंदगी

पत्रिका में विज्ञापन
के लिए हमसे संपर्क करें।

Mob.: 7903935006 / 7903757037

E-mail : bolozindagi@gmail.com

(कला–संस्कृति और सामाजिक चेतना का स्वर)

बोलो जिंदगी

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक

वर्ष–1, अंक: –4 जुलाई–2024

संपादक : **राकेश कुमार सिंह**
सहायक संपादक : **अमलेंदु कुमार**
प्रबंध संपादक : **प्रीतम कुमार**
सलाहकार संपादक : **मनोज भावुक**
कंप्यूटर ग्राफिक्स : **संजय कुमार**
कानूनी सलाहकार : **अमित कुमार**
प्रचार–प्रसार : **अनिल कुमार**
राकेश कुमार 'छोटू'
(ब्यूरो प्रमुख)
मुंबई : **अमृत सिन्हा**
नई दिल्ली एवं कोलकाता : **उज्ज्वल कुमार झा**
पटना: **अभिषेक कुमार**

BIHHIN/2023/86004

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश कुमार सिंह द्वारा अन्नपूर्णा ग्राफिक्स, C/O जय दुर्गा प्रेस, बिहाइंड गुलाब पैलेस, आर्य कुमार रोड, पटना, बिहार– 800004 से मुद्रित एवं 3/8, देवकुमारी भवन, प. बोरिंग केनाल रोड, आनंदपुरी, पटना, बिहार – 800001 से प्रकाशित ।
संपादक : **राकेश कुमार सिंह**

संपादकीय कार्यालय
3/8, देवकुमारी भवन, प. बोरिंग केनाल रोड,
आनंदपुरी, पटना, बिहार – 800001.
मो. – 7903935006/7870110114
ई मेल : bolozindagi@gmail-com

रजि. कार्यालय
3/8, देवकुमारी भवन, प. बोरिंग केनाल रोड,
आनंदपुरी, पटना, बिहार – 800001.
मो. : 7903935006 / 7870110114
ई मेल : bolozindagi@gmail.com

मुंबई कार्यालय :
एक्सप्रेस जोन, मलाड, पंच बावड़ी, मलाड ईस्ट,
मुंबई, महाराष्ट्र– 400097.
मो.– 9386134769.

सभी विवादों का निपटारा पटना की सीमा में आनेवाली सक्षम अदालतों में किया जाएगा।

17 साल बाद फिर टी 20
वर्ल्ड चैम्पियन बना भारत

12

1. नीट यूजी : छले गए बच्चे पर देखिये उनके आंसू न छलकें 2
2. हिन्दुओं का परम पवित्र तीर्थ : गयाजी 3
3. कुश्ती और फिल्में देखने का शौक था : स्व. रामसुंदर दास, भूतपूर्व मुख्यमंत्री, बिहार 5
4. ससुर जी अपने बेटों को तो डॉट देते थें लेकिन मुझे किसी बात पर आजतक नहीं टोकें 6
5. एक्सप्रेशन के चक्कर में कभी डायलॉग भूल जाता तो डायलॉग के चक्कर में एक्सप्रेशन : आनंद मोहन पांडेय, भोजपुरी गायक एवं हास्य अभिनेता 8
6. भारतीय डॉक्टर्स का योगदान इंग्लैंड की मेडिकल संस्थाओं में 9
7. तीसरी कसम फेम गीतकार शैलेन्द्र का भोजपुरी कनेक्शन 10
8. डॉक्टर्स डे का हुआ आयोजन 15
9. पत्थरों पर मनुष्य होने का प्रमाण : भीमबैठका 16
10. करसन भाई पटेल : निरमा के संस्थापक 19
11. आत्मकारक व राजयोग कारक ग्रह सूर्य 20
12. कम पैसे के साथ शेयरों में निवेश कैसे शुरू करें 22
13. जिंदगी का फलसफा : बदलते मौसम की तरह बदलती रहती है जिंदगानी 23
14. नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी केन्द्र सरकार के कामकाज की लगातार समीक्षा कर सकेंगे 24
15. अन्नानास और सेब की जलेबी 26
16. एहसान – कहानी 27
17. देश के बांध मरम्मत को तरस रहे, वहीं विदेशों में बांध तोड़े जा रहे, आखिर क्यों? 29
18. फिल्म जहांगीर नेशनल यूनिवर्सिटी को लेकर विवाद जारी, संगम नगरी तक भी पहुंची आंच 31
19. जी म्यूजिक ने 'एक्सीडेंट और कॉन्सपिरेसी : गोधरा' का 'राम राम' गाना रिलीज किया 32

नीट यूजी :
छले गए बच्चे पर देखिये उनके आंसू न छलकें

एक भरोसा जो छला गया, एक उम्मीद जो टूटी है और एक सपना जो तिनके की तरह बिखर गया है। चेहरे के भाव शून्य में तैर रहे हैं, यह किसी एक चेहरे का भरोसा, किसी एक चेहरे की उम्मीद या किसी एक चेहरे का भाव नहीं है, नीट यूजी की परीक्षा में बैठे 24 लाख छात्रों का भरोसा, उनकी उम्मीद और उनके सपनों का मामला है। इससे भी आगे उन लाखों बच्चों के मन में उपजी दुविधा और भय का मामला है जो आने वाले वर्षों में डॉक्टर या इंजीनियर बनने का सपना देख रहे हैं।

एनटीए की कार्यशैली में चूक ने जिस तरह से भरोसा तोड़ा है और जिस तरह से बच्चों और अभिभावकों के मन पर उसका मनोवैज्ञानिक भय अंकित हुआ है, उसपर शीर्ष पर बैठ इससे जुड़े अधिकारियों को गंभीरता से चिंतन करना चाहिए।

इस मानसिक भय और मन पर पड़े मनोवैज्ञानिक आघात के बीच बोलो जिंदगी अभिभावकों से अपील करती है कि वो अपने बच्चों के साथ खड़े रहें, उन्हें हौसला दें, उन्हें टूटने से बचाएं।

राकेश कुमार सिंह
संपादक

हिन्दुओं का परम पवित्र तीर्थ
गयाजी

✍ डॉ.विभा खरे
जी–9, सूर्यपुरम्, नन्दनपुरा,
झाँसी–284003

गया हिन्दुओं का परम पवित्र और प्रधान तीर्थ है। ऐसी मान्यता है यहां श्रद्धा और पिंडदान करने से पूर्वजों को मोक्ष प्राप्त होता है, क्योंकि यह भी सात धामों में से एक धाम है। गया में सभी जगह तीर्थ विराजमान है, इस कारण गया धाम सब धामों में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। वैसे तो गया क्षेत्र की पवित्रता तथा महत्ता के बारे में अनेकानेक प्रकार के उदाहरण हैं। गया के पित्रों को यम के कष्ट से छुटकारा दिलाने के लिए नियमपूर्वक श्राद्ध के अनुसार पिंडदान करना बहुत जरूरी है। उससे पितृ सीधा स्वर्ग को जाते हैं, जो मनुष्य गया में आकर सर्वप्रथम फल्गू नदी में स्नान करके पिंडदान करता है, उससे उसके साथ पीढ़ियों का उद्धार होता है। बह्मयोनी में पिंडदान करने से पित्रों को स्वर्ग मिलता है, और प्रेतयोनि में पिंडदान करने से पित्रों को प्रेताबाधाओं से मुक्ति मिलती है। गया ही एक ऐसा स्थान है, जहां सिर्फ पहुँच जाने से ही पित्रों को कष्ट से छुटकारा मिलने लगता है। लिहाजा यहां हर वर्ष आश्विन माह में पितृ पक्ष मेला लगता है जिसमें देश– विदेश के हिंदू धर्मावलम्बी पहुँचते हैं।

गया के नामकरण के पीछे एक पौराणिक दंतकथा है। नामकरण गयासुर नामक एक विशाल दानव के नाम पर हुआ। वह बहुत ही बलवान और दीर्घकाय था। दैत्यों के गुरू शुक्राचार्य से इसने वेद–वेदान्त, धर्म का ज्ञान, युद्ध विद्या की शिक्षा प्राप्ति के बाद कठोर तपस्या आरंभ कर दी। इसकी तपस्या से भगवान विष्णु प्रसन्न होकर प्रकट हुए और वर मांगने को कहा। तब गयासुर ने कहा– भगवान जो भी मेरे दर्शन पाये वह सीधा बैकुंठ जाय। भगवान विष्णु जब वर देकर चले गए तो ब्रह्मा घबरा गये, क्योंकि यम और मृत्युलोक नगण्य होने लगा। तब सभी देवताओं को लेकर ब्रह्मा भगवान विष्णु के पास पहुंचे और सारा हाल सुनाया। विष्णु ने उन्हें सुझाव दिया कि आप गयासुर के शरीर पर यज्ञ करने को राजी कर लें। तब ब्रह्मा जी गयासुर के पास पहुंचे और अनुरोध कर कहा–"हमें एक यज्ञ करनी है, कोई ऐसा स्थान आप अपना पवित्र शरीर यज्ञ पूर्ति के लिए दें, तब यज्ञ सफल हो सकता है। धार्मिक विचारों के होने की वजह से गयासुर ने अपना शरीर ब्रह्मा को यज्ञ के लिए सौंप दिया। सभी देवताओं सहित ब्रह्मा भी पांच रूपों के साथ पूरी शक्ति से गयासुर के शरीर पर स्थिर हुए। सभी देवताओं का उद्देश्य था कि उसके शरीर को दबा दिया जाय, लेकिन अपनी तमाम शक्ति के साथ बसने के बावजूद न दबा सके। यज्ञ प्रारंभ होते ही गयासुर का शरीर हिलने लगा। तब सभी देवताओं ने उसके सिर पर धर्मशिला रख दी, लेकिन फिर भी उसका शरीर हिलता रहा। एक बार फिर घबराकर सभी देवता भगवान विष्णु के पास जा पहुँचे और गयासुर के शरीर को शांत करने हेतु प्रार्थना की। तत्पश्चात् विष्णु सभी देवताओं सहित गयासुर के शरीर पर सवार हुए और

स्वयं अपने गदा से वार कर उसके प्राणों का अंत किया।

मृत्यु के पूर्व विष्णु ने गयासुर से वर मांगने को कहा तो गयासुर ने दण्डवत् प्रणाम कर वर मांगा, जहां मेरी मृत्यु हुई है, मैं वही शिला होकर विराजमान रहूँ और उस शिला पर आपके चरण कमलों की स्थापना हो और जब तक सूर्य, चन्द्रमा और तारे इस पृथ्वी पर विद्यमान रहें तब तक ब्रह्मा, विष्णु और महेश हमारे उस शिला शरीर पर अधिष्ठान करें। साथ ही महत्व यह रहे कि जो उस शिला पर पिंडदान और तर्पण करे, उसके पूर्वज सब पापों से मुक्त हों, और स्वर्ग में वास करें। जिस दिन ऐसा न हो इस क्षेत्र और शिला का नाश हो जाये और तब से इस क्षेत्र का नाम ही गया हो गया। विष्णु ने तब वर देते हुए उसके सिर पर अपने चरण कमल को स्थापित किया। देखते–देखते उसका शरीर शिला में परिणित हो गया। इस शिला के अचल के बाद भगवान विष्णु गदा लेकर उपस्थित हुए। इस कारण उनका नाम गदाधर पड़ा।

गदाधर के विराजने पर सभी देवता फल्गु का रूप धारण कर यहां आ पहुंचे, उसके बाद ब्रह्मा ने यज्ञ करने के बाद ब्राह्य ब्राह्मणों को सोना, गृहारत्न इत्यादि दान दिया। तभी से पावन नगरी पवित्र हो गई। यहां पित्तर हमेशा वास करते हैं और भगवान से यही आशा करते हैं कि हमारे कुल में कोई ऐसा मनुष्य पैदा हो जो पिण्डदान करे, जिससे हम सभी पूर्वजों को मुक्ति मिल सके। वैसे गया में पुत्र आगमन से और साथ ही अतः सलिला फल्गु नदी के स्पर्श करने से पित्तरों को स्वर्गवास प्राप्त होता है। साथ ही मृत मनुष्य का आम लेकर पिंडदान करने से उसे मुक्ति प्राप्त होती है। रामशिला, बह्मायोनि आदि पहाड़ियों से गया घिरी हुई है। सभी पर्वतों पर मन्दिर बने हुए हैं।

पिंडदान के लिए यहां लगभग तीन सौ साठ वेदियां थी, वर्तमान समय में लगभग पैंतालिस वेदियों के अतिरिक्त सभी वेदियां लुप्त हो गई हैं। इन पैंतालिस वेदियों में सर्वोपरि विष्णुपद है। विष्णुपद मंदिर को विश्व विख्यात इन्दौर की महारानी अहिल्या बाई ने सन् 1766 ई. में बनवाया था। मन्दिर की बनावट देखने योग्य है। इस विशाल अद्वितीय मंदिर में पानी की बूंदे हर समय टपकती रहती है। दंतकथा के अनुसार यहां खड़े होकर हथेली किसी भी तीर्थ स्थान का नाम लेकर हाथ फैलाने से दो बूंद पानी हथेली पर टपक पड़ता है। इस मन्दिर में ही भगवान विष्णु के चरण चिन्ह विराजमान है। चरण चिन्ह 13 इंच का है इसकी उंगलिया उत्तर की ओर हैं। अन्य वेदियों में सूर्य कुण्ड, उत्तर मानस, रामशिला, मानस तालाब, बोधगया, रामगया, सीता कुण्ड, प्रतेशिला, ब्रह्माकुंड, अक्षयवट, ब्रह्मायोनि, ब्रह्मासद, बैतरणी आदि प्रमुख हैं।

❐

कुश्ती और फिल्में देखने का शौक था : स्व. रामसुंदर दास, भूतपूर्व मुख्यमंत्री, बिहार

1941 में कोलकाता के विधासागर कॉलेज से इंटर करने के बाद राजनीति में चला आया और इतना रम गया कि फिर आगे पढाई नहीं कर पाया। लेकिन हाँ, किताबें पढ़ने का शौक अनवरत जारी रहा। मैं कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी में था, कर्पूरी ठाकुर के बाद 1979 में मैं मुख्यमंत्री बना। उसके पहले की एक घटना याद आती है जब मुझे 103 डिग्री बुखार लगा और मुझे देखने कांग्रेस के बुजुर्ग नेता भागवत सिंह और घिना सिंह आये थे। आते ही बोल पड़े "बड़े नेता बने हुए हो, इतने दिन से बीमार हो और खबर भी नहीं करवाई। क्या पार्टी छोड़ देने से सारे रिश्ते खत्म हो जाते हैं?" और उन दोनों ने ना सिर्फ मेरी दवा दारू की व्यवस्था की बल्कि एक सप्ताह तक नाश्ता/खाना भी भिजवाते रहे। तब के नेताओं में राम मनोहर लोहिया और जे. पी. से हम ज्यादा प्रभावित थे। जय प्रकाश जी के साथ हमने रहकर काम भी किया पर कभी महसूस भी नहीं होता था कि हम बड़े नेता के साथ बैठे हैं, भाईचारा ही इतना अधिक था।

मुझे गाँव से ही कुश्ती से बड़ा लगाव था पर राजनीति में आने पर वह शौक भी छूट गया। हाँ, फिल्में देखने जाता था मगर कभी पसंद न आने पर इंटरवल के पहले या बाद में उठकर चल देता था। जब मैं इंटर में था, वहां विधासागर कॉलेज में बंगाली से ज्यादा बिहारियों की संख्या थी और कभी कभी किसी बात पर दोनों गुटों में भिड़ंत भी हो जाया करती थी पर बाद में सभी एक हो जाते थे। उस वक्त का एक वाक्या याद है। हमारे एक प्रोफेसर साहब पान के शौकीन थे और हमारे एक मित्र के यहाँ अक्सर चाय पीने आया करते थे। हम, हमारे मित्र और उनका नौकर भी पान खाते थे मगर वह थोड़ा तीखा होता था। एक दिन मित्र के यहाँ हम सभी बैठे थे. नौकर पान लेकर रख गया। गलती से हमारा पान प्रोफेसर साहब और उनका पान हमारे मित्र ने खा लिया। उन्हें उलटी होने लगी फिर उन्हें डॉक्टर के पास ले जाना पड़ा। वे ठीक होने पर गुस्से में सबसे यही कहते की मेरे मित्र और उनके नौकर ने उन्हें जान से मारने की साजिश की। तब यह किस्सा हमारे कॉलेज में हास्यास्पद रूप से छा गया था। ❐

प्रस्तुति : राकेश सिंह 'सोनू'

ससुर जी अपने बेटों को तो डाँट देते थें लेकिन मुझे किसी बात पर आजतक नहीं टोकें

–प्रिया सौरभ
एंकर, दूरदर्शन बिहार

मेरा मायका यूँ तो बिहार के नालंदा जिले में हुआ लेकिन मेरे जन्म के कुछ महीने बाद ही मेरी माँ के गुजर जाने की वजह से नानी मुझे अपने पास पटना लेकर आ गयी। पापा बेटा चाहते थें और उन्हें बेटी हो गयी तो इसी खीज में उन्होंने मुझसे एक दूरी बना ली। जब ननिहाल आयी मैं तब 6–7 महीने की थी. वहीँ बड़े होते हुए मुझे नानी ने एक माँ का प्यार दिया। संत जोशफ से प्लस टू करने के बाद पटना वीमेंस कॉलेज से मैंने मास कम्युनिकेशन में ग्रेजुएशन किया। घर में सबका मन था कि मैं डॉक्टर बनूँ लेकिन कहते हैं ना कि जहाँ किस्मत लेकर जाएगी वहीँ जाइएगा।

पढ़ाई खत्म होते ही दर्श न्यूज चौनल में बतौर एंकर मैंने करियर की शुरुआत की. वहां के बाद आर्यन न्यूज ज्वाइन किया। उसमे एक स्पेशल क्राइम शो लेकर आयी थी। जब आर्यन में थें तभी मेरी शादी हो गयी। शादी के दो–तीन महीने बाद ही मैंने जॉब छोड़ दिया। मेरा ससुराल मुजफ्फरपुर के भरथुआ गांव में पड़ता है। चूँकि मैं कॉलेज के समय से ही दूरदर्शन के 'युवालोक' कार्यक्रम से जुड़ी थी। शादी बाद आर्यन छोड़ने पर मैंने दूरदर्शन का 'स्वच्छ भारत' कार्यक्रम शुरू किया। चूँकि मेरा बच्चा होनेवाला था इसलिए थोड़े टाइम के लिए वहां से ब्रेक ले लिया।

जब बच्चा 6 महीने का हो गया तो मैं फिर से दूरदर्शन गयी और वहां 'बिहार बिहान' के लिए लाइव एंकरिंग करने लगी. मॉर्निंग शो था तो झिझक हुई घर में बोलने में कि सुबह–सुबह उठकर चली जाउंगी। फिर जब मैंने किसी तरह घरवालों को बताया तो ससुरालवालों ने बोला कोई बात नहीं। मैं सोच रही थी कि 6 महीने के बच्चे को छोड़कर जाउंगी तो कैसे मैनेज होगा लेकिन मेरे सास–ससुर सबने बोला कि नहीं कोई दिक्कत नहीं है। फिर मैं आराम से जाती थी और आराम से वापस आ जाती थी। शादी के बाद मैंने पोस्ट ग्रेजुएशन भी किया। साथ–साथ पढ़ाई, दूरदर्शन में एंकरिंग और बच्चे व घर–परिवार की जिम्मेदारी चलती रही।

मेरी शादी 28 नवम्बर, 2012 को हुई थी। हमारे यहाँ एक मांग बहुराने की प्रक्रिया होती है जिसमे सुबह–सुबह सूर्योदय से पहले उठकर नाक से मांग तक सिंदूर लगाया जाता है। रिवाज के अनुसार कहा जाता है कि नाक से थोड़े ऊपर का हिस्सा मायके का होता है फिर वहां से ऊपर मांग तक का हिस्सा ससुराल का होता है।. तो सुबह–सुबह करने से मायके और ससुराल में तालमेल बना रहेगा। मुझे बहुत ज्यादा आइडिया नहीं था। वैसे मेरे मायके में दो ममियां हैं लेकिन मैं सोती रहती थी और वे लोग कब ये सारी चीजें कर लेती थीं मुझे खबर ही नहीं पड़ती थी। नई बहु की यह प्रक्रिया सवा महीने तक चलती है। बहुत दिन सुबह–सुबह उठकर नहा लिया कोई दिक्कत नहीं हुई लेकिन जब ठंढ बढ़ी और जब रात में सोने जाती तो दिमाग में यही डर हावी रहता था कि इतनी ठंढ में सुबह उठकर नहाना होगा। सोचकर ही हालत पतली हो जाती थी। बहुत बार कौवा स्नान करके निकल जाया करती थी. घर में किसी को यह बताती नहीं थी कि डाँट पड़ेगा। फिर किसी तरह सवा महीने बीत गए। उसी सवा महीने के दौरान गांव जाना हुआ था कुल देवता की पूजा करने. गांव के रीती–रिवाजों को मैंने गौर से देखा नहीं था। वहां ऐसा था कि दिनभर तैयार होकर बैठे रहना है कि कौन कब आ जायेगा नहीं पता है। जब सब लोग दुल्हन देखने आये तो बड़ा सा घूंघट की हुई थी। सबने कहा–

"बेटा, घूंघट हटाओ." मैंने हटाया तो सब देख रहे थे। चूँकि होता ये है कि जब घूंघट उठाया जाता है तो आँख बंद होनी चाहिए और नीचे की तरफ आँखें झुकी होनी चाहियें। उसी में से किसी ने बोला कि "ऊपर देखो–ऊपर देखो" तो और भी लोग कहने लगें कि "हाँ बेटा, सब यहाँ घर के लोग हैं तो देखो. तब मैंने पटाक से देख लिया। अब सारे लोग लगे हंसने पहले तो मुझे रोना सा आ गया कि एक तो सबने बोला कि ऊपर देखो और जब देखी तो मजाक उड़ाने लगे यह कहकर कि "बोलेंगे ऊपर देखने तो ऊपर देख लोगी।" खैर वो भी समय बीत गया। फिर हमलोग 5–6 दिन बाद वापस पटना आ गएँ।

मुझे बहुत ज्यादा खाना बनाना नहीं आता था। मेरे ससुर को शुगर की प्रॉब्लम है तो मेरी सास ने बोला कि चीनी की खीर तो खाएंगे नहीं तो गुड़ की ही खीर बना दो चूल्हा–छुलाई की रस्म मे। मुझे गुड़ की खीर बनाना आता नहीं था और खास बात कि मेरी सासु माँ को भी नहीं आता था। जब दूध और चावल उबल रहा था तो मैंने हड़बड़ी में गुड़ डाल दिया और दूध फट गया। उस दिन पूरा घर खचाखच मेहमानों से भरा हुआ था और ऐसा फटा हुआ दूध का खीर देखकर कोई भी मजाक उड़ा देता। जब खीर लेकर आएं तो सबको पता चल गया। लेकिन सासु माँ ने अपने ऊपर लेते हुए कहा कि "मेरी गलती है, हम ही बोले कि उबलते हुए ही गुड़ डाल दो और दूध फट गया।" फिर सबने ऐसे ही खा लिया एक–दूसरे के साथ हंसी–मजाक करते हुए. बड़ों ने कहा– "कोई बात नहीं, होता है, आगे से ध्यान रखन।." मेरे ससुर जी खाने के बहुत शौकीन हैं उनको चाहिए की वेरायटी–वेरायटी बनाकर दीजिये तो बहुत खुश होंगे। हांलांकि मैं शुरू–शुरू में खाना बहुत अच्छा नहीं बनाती थी। कभी नमक ज्यादा तो कभी कुछ, लेकिन ससुर जी ने कभी कुछ नहीं बोला। उन्हें नॉनवेज में छोटी मछली बहुत पसंद है जो मुझे बनाने आता नहीं था। तो मैं लेकर तैयार कर देती तो मेरे देवर बना दिया करते थें कि चलो

खराब ना हो, कहीं पापा गुस्सा ना हो जाएँ। वैसे अधिकांशतः जब घर में नॉनवेज आता तो मैं साइड हो जाती और देवर जी ही बनाते थें। मेरी सासु माँ ने तब बोला था– "तुम्हें खाना बनाने की एक साल ट्रेनिंग दूंगी। और क्यूंकि मायके में मेरा कभी किचेन से वास्ता ही नहीं पड़ा। मामा मुझे किचेन में जाने ही नहीं देते थे। लेकिन फिर धीरे–धीरे खाना क्या नॉनवेज बनाने में भी ट्रेंड हो गयी।

जब मुझे ससुराल आये चार–पांच दिन ही हुए थें तब एक बार किचेन के बेसिन में बहुत सारे बर्तन रखे थे। मेड ने सुबह साफ किया था तो शायद जूठा बेसिन में ही छोड़ दिया था जिससे वह पूरा जाम हो गया था। मेड ने बोला– "दीदी जाम हो गया है।" तो हम आएं और कुछ पतला लकड़ी जैसा ढूंढा पर मिला नहीं. बालकनी में लोहे की रॉड रखी थी, मैं लेकर गयी और रॉड जाली में घुसाकर जितनी ताकत मेरे अंदर थी लगा दी। हुआ क्या कि बेसिन तो सही सलामत रहा लेकिन जाली का हिस्सा नीचे गिर गया। फिर बेसिन का गन्दा पानी पूरे घर में फैल गया। सासु माँ ने कमेंट किया कि "इसको बोला गया साफ करने तो इसने पूरा साफ ही कर दिया।" दोपहर का वक्त था, किचेन के बेसिन के बिना काम हो नहीं सकता था तो देवर जी दौड़े–दौड़े मार्केट गए और बेसिन का सामान लेकर आएं। अचानक से प्लम्बर नहीं मिला तो पति–देवर सबने मिलकर उसको ठीक–ठाक किया। मेरी और सासु माँ में इतनी अच्छी बॉन्डिंग है कि जब मेरे और पति के बीच कुछ भी हुआ तो मेरी सासु माँ मेरा ही पक्ष लेती हैं। मेरे ससुर जी को घर में कोई भी बात कहनी होगी तो वे मुझसे ही कहेंगे। वे अपने बेटों को कभी बेटा कहकर नहीं बुलाएँगे लेकिन मुझे कहेंगे 'प्रिया बेटा, प्रिया बेटा' कभी किसी बात को लेकर डांटा तो बिल्कुल भी नहीं। तो मेरी सासु माँ कहती भी थीं कि "कुछ होता है तो आपको बोलना चाहिए, बोलते क्यों नहीं हैं।' लेकिन फिर भी वे मुझे कभी कुछ नहीं बोलेंगे और अपने बेटों को जितना हो सके डाँट सुना देंगे, क्यूंकि बेटियों से उन्हें बहुत प्यार है। मेरी एक ननद है जो फिलहाल दिल्ली में रहती हैं। वे मेरी स्ट्रेस बस्टर हैं, जब उनसे बात करती मेरा सारा स्ट्रेस खत्म कर देती थी। मैं बहुत लकी हूँ कि मायका जितना बेहतरीन है उतना ही ससुराल भी बेहतरीन है। जब मैं 6 कक्षा में थी तभी मेरे मामा की शादी हुई और तब से लेकर अबतक मेरे हर छोटी–मोटी जरूरतें या कुछ भी होता तो मैं मामी को बेफिक्र होकर बोल देती कि मामी ये प्रॉब्लम है।

शादी के एक साल के भीतर मेरी सासु माँ का पी.एम.सी.एच. में मेजर ऑपरेशन हुआ। कहते हैं ना कि घर में कोई बीमार होता है तो पूरा का पूरा परिवार बीमार हो जाता है। तब मैं 8 महीने की प्रेग्नेंसी में 8 –9 दिन हॉस्पिटल में रही और डेली हॉस्पिटल से घर आना–जाना करती थी। दिनभर हॉस्पिटल में रहती सिर्फ रात में सोने के लिए घर आती थी। आस–पड़ोस के लोग टोकते कि बहु को ऐसी हालात में हॉस्पिटल क्यों बुलाती हैं तो सासु माँ कहतीं "जाको राखे साइयाँ मार सके न कोई।' जो होना होगा वही होगा। अब मेरे घर में मेरे साथ यही है तो यही आएगी ना।" तब ससुर जी भी बहुत ख्याल रखते थे। खाना–वाना, जूस लेकर मुझे देते थें कि हॉस्पिटल में हूँ तो मुझे परेशानी न हो। यही सब चीजें हैं कि जब आपको बहुत सपोर्ट मिलता है तो परेशानी फिर परेशानी नहीं लगती। खैर अभी तक मैं सुसराल से लेकर मायके तक सबकी लाड़ली हूँ।

❐

एक्सप्रेशन के चक्कर में कभी डायलॉग भूल जाता तो डायलॉग के चक्कर में एक्सप्रेशन : आनंद मोहन पाडेय, भोजपुरी गायक एवं हास्य अभिनेता

पहली फिल्म 'राजा भोजपुरिया' मुझे मिलने के पीछे कहानी ये रही कि सुदीप स्टूडियो खार, मुंबई में लेखक–गीतकार विनय बिहारी जी से प्रोड्यूसर आलोक सिंह और डायरेक्टर अजीत श्रीवास्तव जी मिलने आये थे। जब वो लोग आये तो मैं म्यूजिक डायरेक्टर धनंजय मिश्रा की मौजूदगी में माईक पर गाना गा रहा था। उनकी फिल्म में एक कैरेक्टर था बजरंगी पहलवान का तो उनलोगों ने जब मुझे देखा तो विनय जी से बोले कि "ये आदमी अगर एक्टिंग करे तो मैं इसे एक रोल दे दूँ।" मैं जब गाकर आया तो विनय जी ने कहा "जाइये आपका लाइफ सेट हो गया, आपको फिल्म में काम मिल गया।" हमने कहा "विनय जी, हमलोग कलाकार आदमी गाना गानेवाले लोग हैं, कहाँ झूठमूठ का कैमरा–वैमरा के चक्कर में फंसा रहे हैं। हमको नहीं आता है कुछ, हम नहीं करेंगे।" इसपर वहां बैठे सभी लोग मुझे डांटने लगे। बोले कि "यार यहाँ 20 वर्ष तक तपस्या लोग करते हैं तो काम नहीं मिलता है और आपको यहाँ सामने से काम मिल रहा है तब आप कह रहे हैं नहीं करेंगे, ये दुर्भाग्य है आपका।" हमने कहा " ऐसा है तो क्या करना होगा मुझे ?" तब डायरेक्टर–प्रोड्यूसर ने कहा "आप चलिए, कुछ नहीं करना होगा, हम जानते हैं आप आसानी से कर लेंगे।"

फिर उनके बहुत कहने–सुनने पर मैं चला गया बनारस शूटिंग में। वहां पहले दिन की शूटिंग में देखा कि रवि किशन जी हीरो हैं और लाइफ में पहली दफा मैंने स्क्रीप्ट देखी थी। मैं कुछ जानता ही नहीं था। वे लोग बोले कि "स्क्रीप्ट याद करना है। ये याद कर लीजिये, आज आपकी शूटिंग है।" जब

स्क्रीप्ट मिला तो मैंने याद कर लिया, मैं सेट पर गया, कैमरा वगैरह लगा था। रवि किशन जी आएं, वो फिल्म में मेरे चेला थे और हम गुरु थे। जब एक्शन की आवाज आयी तो हम कुछ नहीं बोले। फिर एक्शन बोला गया तब भी हम कुछ नहीं बोले। मैंने पूछा "एक्शन का मतलब क्या?" तो वे बोले "एक्शन का मतलब शुरू हो जाओ।" मेरे ओके कहने पर जब वो फिर एक्शन बोले तो हम बोलना चालू हो गएँ। तभी डायरेक्टर बोले– "कट–कट–कट"। अरे यार अपना सिर्फ कैरेक्टर बोलो, बजरंगी जहाँ लिखा हुआ है।" हम बोले "हम तो पूरा स्क्रीप्टे याद कर लिए हैं। हम गायक आदमी क्या जानेंगे।" तो वे समझाएं "नहीं, सिर्फ बजरंगी वाला कैरेक्टर आपका है और किशन का जो है वो रवि किशन जी बोलेंगे। सबको अपना अलग–अलग बोलना है।" हमने कहा "ठीक है, अब फिर से याद करने दीजिये।"

तब फिर याद किये केवल बजरंगी–बजरंगी करके। फिर एक्शन बोला गया और फिर मैं चालू हो गया। तब बीच में डायरेक्टर टोकें "यार एक्सप्रेशन भी कोई चीज होता है। क्या यार एकदम किताब की तरह पढ़ रहे हो।" हम थोड़ा खीज उठे और कहें, "हम इसीलिए बोले थें कि बम्बई से हमको मत लाइए सिनेमा में, हम कैमरा– वैमरा झूठमूठ का ये सब जानते नहीं हैं।"

तब डायरेक्टर ने समझा–बहलाकर कहा– "अच्छा फिर से करो।" फिर एक्शन बोला गया तो जब मैं चालू किया एक्टिंग करना तो एक्सप्रेशन के चक्कर में कभी डायलॉग भूल जाऊँ तो डायलॉग के चक्कर में एक्सप्रेशन भूल जाऊ।"

बहुत जद्दोजहद करने के बाद रवि किशन ने कहा– "ये गायक कलाकार हैं, इनसे पहले गाने का सीन शूट करवाइये।" तत्काल हमलोग बगीचे में गएँ, गाना किये। कुछ भटक खुला, उसके बाद लोगों ने कॉपरेट करके मुझसे एक्टिंग कराना चालू कर दिया। पूरी फिल्म की शूटिंग हो गयी और उसके बाद जो है रिजल्ट सबके सामने है। फिल्म सुपरहिट रही और फिल्म में बजरंगी के मेरे कॉमिक रोल को दर्शकों ने बहुत ज्यादा पसंद किया।

फिर तो मुझे दनादन फिल्मों में कॉमेडी एक्टिंग के ऑफर मिलने लगें। फिर सैकड़ों फिल्में करने का मौका मिला। ये सौभाग्य है हमारा कि हम आज भी एक्टर नहीं हैं, अपने को एक्सीडेंटल एक्टर मानते हैं लेकिन पब्लिक का प्यार है, भगवान का आशीर्वाद है कि आप सभी लोग मुझे आज भी एक्टिंग करते देख रहे हैं। ❐

प्रस्तुति : राकेश सिंह 'सोनू'

भारतीय डॉक्टर्स का योगदान इंग्लैंड की मेडिकल संस्थाओं में

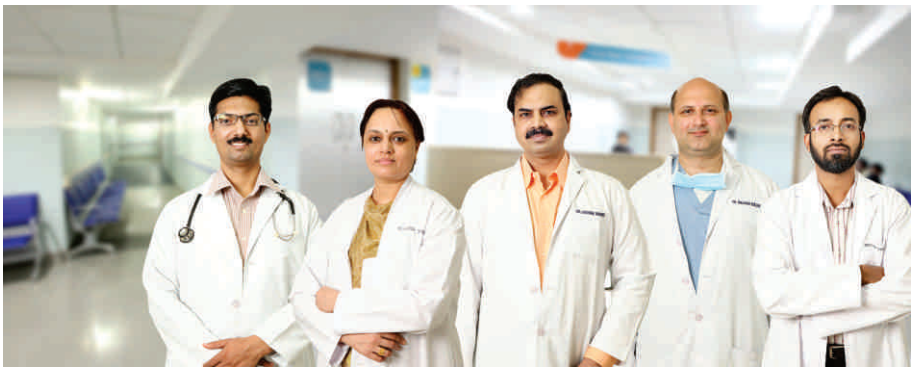

✍ शरद कुमार झा
काउंसलर, बकिंघमशायर, लंदन

यूनाइटेड किंगडम में भारतीय मूल के डॉक्टर्स का योगदान हर क्षेत्र में श्रेष्ट रूप से सराहनीय रहा है। इनका परिश्रम और बुद्धिमत्ता अनुपम रूप से अद्वितीय है।

अब तो तीन या चार पुश्तों से भारतीय मूल के डॉक्टर्स हम सबका नाम रौशन करते हुए सर्वश्रेष्ठ कीर्तिमान स्थापित कर रहे हैं।

स्वतंत्रता के पहले से देश विदेश में हमारे चिकित्सक कड़ी मेहनत करके अलग अलग देशों में स्थापित हुए हैं। यह दिखने में भले ही आसान लगता हो, पर बहुत मुश्किल है। एक तपस्या है – केवल पढाई की ही नहीं दिमाग को संतुलित रखना, मानसिक तनाव को संयम में रखना, साथ–साथ परिवार और समाज के साथ संतुलन रखना।

डॉ. अरुण कुमार चौधरी मनोचिकित्सा के बहुचर्चित डॉक्टर हैं। डॉक्टर अलका ठाकुर प्रसिद्ध पेडियेट्रिक डॉक्टर हैं। प्रोफेसर डॉक्टर एस. एन झा (शैलजा नन्द झा) ९१ वर्ष के हैं। इन्होंने कई ऑपरेशन किये हैं। शलयचिकित्सा में कीर्तिमान स्थापित कर – इन्होंने कई जरुरतमंद की मदद की। उन्हें ऍफ आर सी एस १९६८ में मिला। हमें गर्व है आदरणीय प्रोफेसर डॉक्टर एस. एन. झा पर। समादर संघ सत्कार पूर्वक नमन उनको।

ऐसे कई डॉक्टर यहाँ से पढाई पूरा कर भारत और अन्य कई देशों में अपनी सेवा प्रदान कर रहे हैं, जैसे की डॉक्टर टी के झा, आर एन मिश्र एवं कई अन्य। वे चाहते तो वे भी यहाँ रहकर आराम की जिन्दगी बसर करते। पर उन्होंने अपनी भारत माँ की मिटटी को चुना।

यूके में डॉक्टरों और नर्सों की काफी कमी हो गई है। फिर भी यहाँ नौकरी पाना पहले से काफी मुश्किल हो गया है। योग्य डॉक्टरों को भी यहाँ नौकरी पाना आसान नहीं। परीक्षा पास करने और काफी अनुभव होने पर भी सही ओहदे का काम पाना एक तरह से नामुमकिन को मुमकिन करना होता है। स्पॉन्सरशिप देना एक बिजनेस/रैकेट हो गया है – नर्सें और हेल्थ केयर वर्कर के काम के लिये तो कई लाख रूपये खर्चा कर लोग यहाँ आते हैं। बाद में एहसास होता है कि अपना भारत ही ज्यादा अच्छा था। हमारे तो कई दोस्त ब्रिटिश पासपोर्ट होने पर भी भारत वापस जा रहे हैं। यूके और अमेरिका में अब वो बात नहीं रही। हमारा भारत कहीं आगे निकल चुका है। पर अभी भी कुछ चीजों पर ध्यान देना अनिवार्य है (1) एकात्मकता – 28 राज्य और 8 केंद्रशासित प्रदेश के निवासी जब अपने आप को भारतीय पहल मानें और हर भारतीय को खुद के परिवार का भाग माने, बाद में अपने राज्य को खुद से जोड़ें – तब जाके सम्पूर्ण भारत का निर्माण होगा। तब कोई भी हमें जाति, धर्म और वर्ग के हिसाब से नहीं तोड़ सकता। तब दुनिया भर के डॉक्टर्स हमारे यहाँ आएंगे, हमें कहीं भी जाने की जरूरत नहीं।

(2) दूसरी जरूरी बात, जिस पर ध्यान देना अति आवश्यक है – वो है लॉ एंड आर्डर (कानून और सुव्यवस्था) – अगर हमारे भारत का कानून और सुव्यवस्था सख्त हो जाये तो 50% से 60% कार्य संपन्न हो जायेगा। इंग्लैंड में एकात्मकता और कानून व्यवस्था मजबूत और अत्यधिक रूप से शक्तिशाली है।

कोरोना काल में भारतीय मूल के डॉक्टर्स, अन्य डॉक्टर्स संघ जान की बाजी लगाके काम किये। समादर संघ सत्कार पूर्वक नमन हर एक चिकत्सक को। चेहरे पर एक निश्चयात्मक, सकारात्मक मुस्कान रख के जिस तरह से वे आसानी से अपनी जिन्दगी को आगे बढ़ाते हैं ये हर व्यक्ति के लिए प्रेरणा स्वरुप है। जय हिन्द, जय भारत – हर चिकित्सक, वैद्य आचार्य को हमारा श्रद्धापूर्ण सम्मान पूर्ण प्रणाम।

❐

तीसरी कसम फेम गीतकार शैलेन्द्र का भोजपुरी कनेक्शन

✍ मनोज भावुक
भोजपुरी सिनेमा के इतिहासकार, फिल्म गीतकार व भोजपुरी जंक्शन पत्रिका के संपादक

जन्मतिथिः 30 अगस्त 1923
पुण्यतिथिः 14 दिसंबर 1966

जब नाजिर हुसैन की कहानी और मार्गदर्शन पर निर्देशक कुंदन कुमार ने भोजपुरी की पहली फिल्म 'गंगा मैया तोहे पियरी चढ़इबो' बनाई तो गीत का जिम्मा शैलेन्द्र को दिया गया। तब हिन्दी सिनेमा में एक बड़ा नाम था– शैलेन्द्र। गोपालगंज वाले संगीतकार चित्रगुप्त ने आरा वाले गीतकार शैलेन्द्र के गीतों को संगीतबद्ध किया और फिर जो जादू हुआ, उसे दुनिया जानती है।

लेकिन बहुत समय तक यह सवाल रहा और आज भी बहुत लोग यह चौंकते हैं कि शैलेन्द्र तो रावलपिंडी, पंजाब (ब्रिटिश शासित भारत) में पैदा हुए तो वह आरा वाले कैसे हो गये? उनकी भोजपुरी इतनी अच्छी कैसे हो गई ? . चौंकने वाले तो तब भी चौंके थे, जब उन्होंने अपने निर्माण में बनी फिल्म तीसरी कसम का लोकप्रिय गीत 'चलत मुसाफिर मोह लियो रे, पिंजरे वाली मुनिया' लिखा, 'पान खाए सइयाँ हमार हो, साँवली सुरतिया आ होंठ लाल' लिखा। यह सब भी तो भोजपुरी भाषा के निकट वाला गीत है। तो इतना सटीक भोजपुरिया टोन तो तभी आ सकता है जब आप उस हवा–पानी और मिट्टी के हों या उस हवा–पानी और मिट्टी में रहे हों।

दरअसल शैलेन्द्र के बाबूजी और दादा परदादा आरा के अख्तियारपुर (बड़का गाँव) के निवासी थे। उनके घर में मातृभाषा भोजपुरी में ही बातचीत होती थी, जिसका असर शैलेन्द्र पर पड़ा और बाद में उनके कृतित्व पर भी पड़ा। गाईड फिल्म का गीत 'पिया तोसे नैना लागे रे, नैना लागे रे' तो आपने सुना ही होगा। यह गीत उनके भोजपुरिया कनेक्शन को बहुत सुंदरता से दिखाता है। एक गीत है मधुमती फिल्म का जो दिलीप कुमार और वैजयंतीमाला पर फिल्माया गया है,

शैलेन्द्र ने ही लिखा है–

'ओ बिछुआ, हाय रे
पीपल छइयां बैठी पलभर हो भर के गगरिया, हाय रे
दईया रे, दईया रे, चढ़ गयो पापी बिछुआ
ओ हाय हाय रे मर गई, कोई उतारो बिछुआ'

इस गीत में टोनालिटी से लेकर शब्दों के प्रयोग तक भोजपुरिया पुट लिए हुए है। ऐसे अनेक गीत हैं जो शैलेन्द्र के भोजपुरिया संस्कार की पुष्टि करते हैं। हालांकि जब शैलेन्द्र जवान हो रहे थे तब मथुरा में रहते थे। उनके बाबूजी आरा से रावलपिंडी नौकरी की खोज में गये और फिर वहाँ से मथुरा आ गये। शैलेन्द्र की जवानी की शुरुआत मथुरा में हुई। उनके एक मित्र थे इन्द्र बहादुर खरे, जो खुद भी कवि थे। दोनों लोग एक ही स्कूल में पढे और बाद में साथ ही कविताई करना भी चालू कर दिए। बाद में शैलेन्द्र रेलवे की नौकरी करने बंबई आ गये और उनके मित्र काव्य साहित्य में आगे बढ़

गये। यह भी कारण रहा कि शैलेन्द्र के गीतों में भोजपुरी के साथ ब्रज भाषा का भी छौंक देखने को मिल जाता है।

भोजपुरी सिनेमा के शुरुआती गीत शैलेन्द्र ने ही लिखा

शैलेन्द्र का भोजपुरिया परिचय ही था कि संगीतकार चित्रगुप्त ने उन्हें ''गंगा मैया तोहे पियरी चढ़इबो'' के सभी गीतों का जिम्मा दे दिया। इस फिल्म के गीत रेडियो और रिकॉर्ड पर यूं छाए कि यह फिल्म सिनेमाहाल से कई महिनो तक उतरा ही नहीं। लोग सिनेमाघरों तक बैलगाड़ी से जाते थे, पैदल जाते थे लेकिन फिल्म देखते जरूर थे। शैलेन्द्र के लिखे गीत 'सोनवा के पिंजरा में बंद भइल हाय राम', 'मोरे करेजवा में पीर हाय राम', 'काहें बाँसुरिया बजवले', 'लुक छिप बदरा में चमके जइसे चनवा', 'अब त लागल मोरा सोरहवा साल, लोगवा नजर लगावेला' .. आज भी लोग गुनगुनाते हैं। इन गीतों में आपको जीवन दर्शन से लेकर अठखेली और लड़कपन भी देखने को मिलता है। शैलेन्द्र का रचना संसार बहुत समृद्ध है।

शैलेन्द्र ने भोजपुरी के कई उल्लेखनीय फिल्मों में गीत लिखे जइसे मितवा, नईहर छुटल जाए, गंगा, सइयां से नेहिया लगइबे, विधना नाच नचावे आदि।

हालांकि, गीतकार के रुप में उनका पहला गीत राजकपूर की फिल्म बरसात (1949) का है– ''बरसात में तुमसे मिले हम सजन'। शैलेन्द्र की लेखन क्षमता का पता भी राजकपूर ने ही लगाया था। इस फिल्म से एक नए संगीतकार जोड़ी शंकर जयकिशन ने भी अपने सफर की शुरुआत की थी। इस जोड़ी और शैलेन्द्र ने मिलकर एक से बढ़कर एक गीत हिन्दी सिनेमा को दिए।

शैलेन्द्र का अंतिम गीत उनके बेटे ने पूरा किया

शैलेन्द्र की सेहत ठीक नहीं चल रही थी। 13 दिसंबर 1966 को अस्पताल जाते समय राजकपूर के बुलाने पर वह उनके आर के काटेज मिलने गए। राजकपूर ने अपनी फिल्म 'मेरा नाम जोकर' के गीत "जीना यहां मरना यहां इसके सिवा जाना कहां" को पूरा करने के लिए कहा। शैलेन्द्र वह गीत पूरा नहीं कर पाए और अगले दिन 14 दिसंबर 1966 को उनकी मृत्यु हो गई। उसी दिन राजकपूर का जन्मदिन भी था। तमाम रिपोर्ट की माने तो शैलेन्द्र के बेटे शैली शैलेन्द्र ने अपने पिता के अधूरे गीत "जीना यहां मरना यहां" को पूरा किया।

30 अगस्त 1923 को जन्में शैलेन्द्र की मृत्यु मात्र 43 साल की उम्र में ही हो गई। संजोग देखिए कि इसी साल उनकी एक फिल्म ''तीसरी कसम'' जिसके वह निर्माता भी थे, रिलीज हुई और रिलीज के कई सप्ताह बाद सुपरहिट भी हुई मगर शैलेन्द्र यह सब देखने के लिए दुनिया में नहीं थे।

शंकरदास केसरीलाल शैलेन्द्र की डायरी में उनके पैतृक गाँव के बारे में जिक्र था। उनकी बेटी अमला शैलेन्द्र मजुमदार दुबई में रहती हैं। वह आरा शहर से तीन किलोमीटर दूर स्थित अपने पुरखों के गाँव अख्तियारपुर (बड़का गांव) 2019 में गईं थी। शैलेन्द्र के बेटे भी अख्तियारपुर हो आए हैं।

तीन बार सर्वश्रेष्ठ गीतकार के फिल्मफेयर पुरस्कार से सम्मानित, एकमात्र काव्य–संगह 'न्यौता और चुनौती' (मई 1955 ई. में प्रकाशित) के प्रणेता, मार्क्सवादी कवि और अपने समय के सबसे लोकप्रिय व बॉलीवुड के सबसे महंगे गीतकारों में से एक शैलेन्द्र के पावन स्मृति को नमन!

जब तक धरती–चाँद है, दुनिया है, आशावादी रुझान का यह गीत शैलेन्द्र की याद दिलाता रहेगा, लोगों को जगाता रहेगा–

"तू जिन्दा है तू जिन्दगी की जीत पर यकींन कर
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला जमीन पर"

"ये गम के और चार दिन, सितम के और चार दिन, ये दिन भी जायेंगे गुजर, गुजर गये हजार दिन"।

❐

17 साल बाद फिर टी 20
वर्ल्ड चौम्पियन बना भारत

17 साल बाद टीम इंडिया ने इतिहास रचते हुए फिर एकबार टी 20 वर्ल्ड कप क्रिकेट चौंपियन का खिताब अपने नाम कर लिया।

यहां प्रस्तुत हैं इस खेल से जुड़े कुछ रोचक तथ्यः –

1) इंडिया इकलौती टीम, जो 2 वन डे वर्ल्ड कप, 2 टी 20 वर्ल्ड कप और 2 चौंपियंस ट्रॉफी जीती है।

2) टीम इंडिया बिना कोई मैच हारे टी 20

वर्ल्ड चौंपियन बननेवाली पहली टीम।

3) एक टी 20 वर्ल्ड कप में सबसे ज्यादा 8 मैच जीतने का दक्षिण अफ्रीका के साथ संयुक्त रिकॉर्ड भी बनाया।

4) विराट कोहली ऐसे एकमात्र भारतीय खिलाड़ी हैं, जो सभी आईसीसी ट्रॉफी विजेता टीम का हिस्सा रहें। अंडर 19 वर्ल्ड कप, वन डे वर्ल्ड कप, चौंपियंस ट्रॉफी और अब टी 20 वर्ल्ड कप में विजेता बनें।

5) रोहित शर्मा सभी 9 टी 20 वर्ल्ड कप में खेलनेवाले इकलौते भारतीय खिलाड़ी रहे।

6) रोहित शर्मा टी 20 वर्ल्ड कप जीतनेवाले सबसे युवा (20 साल 147दिन) और सबसे उम्रदराज (37 साल 60 दिन) भारतीय रहे।

7) रोहित टीम इंडिया को वर्ल्ड कप दिलानेवाले तीसरे कप्तान बन गए। वे कपिल देव और धौनी के क्लब में शामिल हो गए।

8) वर्ल्ड कप में 50 छक्के लगानेवाले रोहित दूसरे बल्लेबाज हैं। उनके अलावा क्रिस गेल (63) ही यह कारनामा दिखा पाए हैं।

9) टीम इंडिया को बीसीसीआई ने 125 करोड़ रूपए की इनामी राशि देकर सम्मानित किया।

जब भारतीय टीम ने कपिलदेव की कप्तानी में 1983 का वर्ल्ड कप जीता था तब टीम को प्रोत्साहित करने

के लिए बीसीसीआई के पास पैसे नहीं थें। बोर्ड ने तब खिलाड़ियों को 25–25 हजार देने का ऐलान किया था। तब भारत कोकिला लता मंगेशकर ने म्यूजिक कंसर्ट कर फंड जुटाए और उन्हीं एकत्र किए पैसों से खिलाड़ियों को एक एक लाख रुपए दिए थें।

17 साल पहले पाकिस्तान को हराकर पहली बार टी 20 का खिताब जीतनेवाली टीम को बोर्ड ने 10 करोड़ की इनामी राशि दी थी। इतना ही नहीं तब एक ओवर में लगातार छह छक्के मारनेवाले सिक्सर किंग युवराज सिंह को एक करोड़ अलग से दिए गए थें।

जब 2011 में धौनी की कप्तानी में श्रीलंका को हराकर टीम इंडिया 28 साल बाद फिर से वन डे में वर्ल्ड चौंपियन बनी। विजयी टीम को बीसीसीआई ने 39 करोड़ रूपए की इनामी राशि दी थी। ❐

डॉक्टर्स डे का हुआ आयोजन

पटना, 29 जून, 2024 को बोलो जिंदगी वेलफेयर फाउन्डेशन और न्यू लाइफ हॉस्पिटल के तत्वावधान में डॉक्टर्स डे के उपलक्ष्य में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें बतौर मुख्य अतिथि असिस्टेंट प्रोफेसर, पीएमसीएच पटना एवं प्रसूति व स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. अर्चना मिश्रा तथा असिस्टेंट प्रोफेसर, पीएमसीएच पटना एवं सर्जन व यूरोलॉजिस्ट डॉ. पंकज मिश्रा उपस्थित रहें और कार्यक्रम में आए लोगों को संबोधित करते हुए अच्छे स्वास्थ को लेकर कई मूल्यवान सुझाव दियें।

उपस्थित लोगों ने भी डॉक्टर्स से कुछ अहम सवाल पूछें और उनसे निःशुल्क उचित चिकित्सीय परामर्श हासिल किएं। उपस्थित लोगों के बीच विटामिन, आयरन की दवाएं भी वितरित की गईं।

संस्था की तरफ से कार्यक्रम में मौजूद लोगों के बीच म्यूजिकल चेयर गेम का भी आयोजन किया गया। उक्त कार्यक्रम का संचालन प्रीतम कुमार ने किया तो धन्यवाद ज्ञापन बोलो जिंदगी वेलफेयर फाउन्डेशन के संस्थापक निदेशक राकेश सिंह सोनू ने किया। ❐

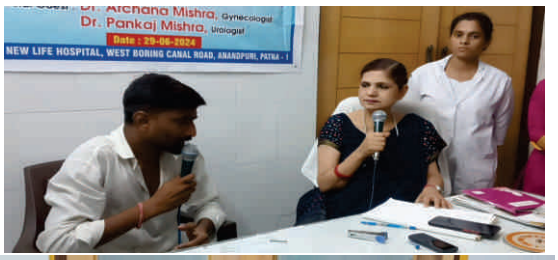

पत्थरों पर मनुष्य होने का प्रमाण : भीमबैठका

✍ डॉ. किशोर सिन्हा
वरिष्ठ नाटककार और मीडिया–विशेषज्ञ

भीमबैठका (भीमबेटका) मध्यप्रदेश के रायसेन जिले में स्थित एक पुरापाषाणीय विश्वप्रसिद्ध स्थल है, जो आदिमानव द्वारा बनाये गए शैलचित्रों और शैलाश्रयों के लिए जाना जाता है। माना जाता है कि ये चित्र, पुरापाषाण काल से मध्यपाषाण काल के बीच के हैं जो भारतीय उपमहाद्वीप में मानव–जीवन के प्राचीनतम चिह्न हैं। भीमबैठका मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल से लगभग 45 किमी दक्षिणपूर्व में स्थित है। भोपाल पहुंचने के लिये वायु, रेल और सड़क–मार्ग का सहारा लिया जा सकता है और उसके बाद भीमबैठका आप सड़क मार्ग से पहुंच सकते हैं। इस स्थल की खोज, वर्ष 1957–58 के बीच विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के एक पुरातत्ववेत्ता डॉ० विष्णु वाकणकर द्वारा की गई थी। भीमबैठका क्षेत्र को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, भोपाल मंडल द्वारा अगस्त–1990 में 'राष्ट्रीय महत्त्व का स्थल' घोषित किया गया। इसके बाद जुलाई–2003 में यूनेस्को द्वारा इसे 'विश्व धरोहर–स्थल' के रूप में मान्यता दी गई।

भीमबैठका तथा उसके आसपास की पहाड़ियां, प्राकृतिक जल–विभाजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। पहाड़ी के दूसरी ओर, वर्तमान बेतवा नदी का विशाल कछार–मैदान दिखाई देता है। भीमबैठका तथा इसके आसपास की पहाड़ियों के उत्तर में प्रवाहित जल–स्रोतों का समागम बेतवा नदी में ही होता है जबकि पहाड़ों की दक्षिणी ओर की जलधाराएं नर्मदा नदी में जाकर मिलती हैं। नदियों के अतिरिक्त भीमबेटका के दक्षिण–पूर्व में एक नाला बहता है जो 'जामुनझिरी' के नाम से प्रसिद्ध है। इसके अलावा यहां बाण गंगा, गुप्त गंगा तथा पंडापुर नामक तीन सदाबहार झरने हैं, जो स्थानीय निवासियों द्वारा दिन–प्रतिदिन के कार्यों के लिए प्रयोग में लाये जाते हैं। हरीतिमा–भरे सघन वन से, ऊपर, धरती की छाती से बाहर निकले हुए, इस विशाल बलुआ पत्थर में, प्राकृतिक रूप से बनी गुफाओं के पाँच समूह हैं। भीमबैठका की गुफाओं की विशेषता यह है कि यहां की चट्टानों पर हजारों वर्ष पूर्व बनी चित्रकारी आज भी मौजूद है। इन गुफाओं की संख्या करीब 500 बताई जाती है।

भीमबैठका की गुफाएं प्रागैतिहासिक काल की चित्रकला और मानव द्वारा बनाये गए शैल–चित्रों और शैलाश्रयों के लिए लोकप्रिय हैं। गुफाओं की सबसे प्राचीन चित्रकारी लगभग 12000 साल पुरानी मानी जाती है। इन गुफाओं की तस्वीरें प्रायः खनिज रंगों में हैं, जो मुख्य रूप से गेरुआ, लाल और सफेद रंग से मिलती हैं, पर कहीं–कहीं पीले और हरे रंग के बिन्दुओं का भी प्रयोग दिखाई देता है। इन चित्रों के विषय मुख्य तौर पर दैनिक जीवन की घटनाएं हैं, जो हजारों साल पहले की जीवन–शैली को दर्शाती हैं। इनमें शिकार, पशु–पक्षी, युद्ध, सामूहिक नृत्य, रेखांकित मानवाकृति तथा प्राचीन मनुष्यों के रहन–सहन और दैनिक क्रियाकलापों से जुड़े विषय प्रधान हैं। इन चित्रों को पुरापाषाण काल से मध्यपाषाण काल के समय का माना जाता है। इन शैल–चित्रों में असंख्य परतें हैं जिनका संबंध, उत्तर–पुरापाषाण काल तथा मध्य–पाषाण काल से लेकर पूर्व– ऐतिहासिक काल, परवर्ती–ऐतिहासिक काल और

मध्ययुगीन काल से जुड़ता है। ऐसा माना जाता है कि यहां के सर्वाधिक प्राचीन चित्र मध्यपाषाण काल से संबंधित हैं। ये उत्कृष्ट चित्र दुरूह ऊंचाइयों पर बने शैलाश्रयों की छत में अंकित हैं। यहां के अन्य पुरावशेषों में लघुस्तूप, प्राचीन किले की दीवार, पाषाण–निर्मित भवन, शुंग–गुप्त कालीन अभिलेख, शंख अभिलेख और परमार–कालीन मंदिर के अवशेष महत्वपूर्ण हैं।

'भीमबैठका' नाम कैसे पड़ा, तो इसके बारे में ऐसा माना जाता है कि अपने राज्य से निर्वासित होने के बाद पांडव यहां आये थे और इन गुफाओं में रहे थे। बड़ी–बड़ी भीमकाय चट्टानों के बीच, पांडव–भीम के विशालकाय शरीर के अनुरूप बैठने के स्थान हैं। पांडवों से इसे जोड़ने के पक्ष में एक अन्य प्रमाण ये दिया जाता है कि इन गुफाओं के आसपास के कुछ स्थानों के नाम पांडवों के नाम से मिलते–जुलते हैं। जैसे एक गांव, 'पांडापुर' के नाम से जाना जाता है और 'भिंयापुरा' को 'भीमपुरा' का ही विकृत रूप माना जाता है। पास में ही 'लखाजुहार' नाम का एक वन है, जिसके लिये कहा जाता है कि यह पांडवों का लाक्षागृह था। हालांकि ये दावे कितने प्रामाणिक हैं, इसपर कोई शोध अभी तक नहीं हो पाया है।

भीमबैठका में 600 शैलाश्रय पाये गये हैं, जिनमें 275 शैलाश्रय चित्रों द्वारा सज्जित हैं। पूर्व–पाषाण काल से मध्य–ऐतिहासिक काल तक यह स्थान मानव–गतिविधियों का केंद्र रहा। भीमबैठका क्षेत्र में प्रवेश करते हुए शिलाओं पर लिखी कई जानकारियां मिलती हैं। अनुमान है कि इन शैलाश्रयों की अंदरूनी सतहों में उत्कीर्ण प्यालेनुमा निशान एक लाख वर्ष से भी अधिक पुराने हो सकते हैं। इनमें दैनिक जीवन की घटनाओं से लिए गए विषय चित्रित हैं जो हजारों वर्ष पहले के जीवन को दर्शाते हैं। यहां उत्कीर्ण चित्र मुख्यतः संगीत, नृत्य, आखेट, घोड़ों और हाथियों की सवारी, आभूषणों को सजाने तथा शहद जमा करने को लेकर हैं। इनके अलावा कुत्ते, बाघ, सिंह, जंगली सुअर, हाथी और घड़ियाल–जैसे जीव भी इन तस्वीरों में चित्रित हैं। कई स्थानों पर यहां की दीवारों पर धार्मिक चिह्न भी पाये गये हैं, जो तत्कालीन समय में लोकप्रिय थे। एक प्रकार से भीमबैठका के प्रागैतिहासिक मनुष्य के बौद्धिक विकास का कालक्रम, विश्व की दूसरी पुरानी सभ्यताओं से हजारों वर्ष पूर्व का है। इस दृष्टि से इस स्थान को मानव–विकास का आरंभिक स्थान भी कह सकते हैं।

भीमबैठका आदिकाल से मानव की निवास–स्थली रही है। मानव के विकास–क्रम को जानने के उद्देश्य से यहां अनेक पुरातात्विक उत्खनन किए गए हैं। इन विभिन्न उत्खनन के परिणामस्वरूप इनके सांस्कृतिक क्रम को प्रकाश में लाया गया है। सर्वाधिक निचले स्तर से– निम्न–पुरापाषाण काल (एक लाख से चालीस हजार वर्ष पूर्व) के अवशेष– जिनमें गोल–चिकने पाषाण उपकरण मुख्य हैं, तथा इसके ऊपर 'एश्यूलियन जमाव' का एक स्तर प्राप्त हुआ है। इन दो स्तरों के मध्य आवास के प्रमाण प्राप्त नहीं हुए हैं। मध्य–पुरापाषाण काल (40000 से 20000 वर्ष पूर्व)– के स्तर से प्राप्त अधिकतर उपकरण प्रस्तर–फलक पर ना बनाकर, प्राकृतिक रूप से समतल पाषाण का प्रयोग कर बनाए गए हैं। उच्च–पुरापाषाण काल (20000 से 10000 वर्ष पूर्व) के उत्खनित स्तरों से प्राप्त उपकरणों में मुख्यतः छोटे एवं बेलनाकार ब्लेड की प्रचुरता है। मध्य–पाषाण काल (10000 से 2500 वर्ष पूर्व) में मानव द्वारा सिलिका युक्त पाषाण– जैसे 'चर्ट' तथा 'चाल्सीडोनी' से निर्मित लघु उपकरणों का प्रयोग किया जाता था। इस काल में भीमबैठका की लगभग सभी गुफाओं एवं शैलाश्रयों में मानव निवास कर रहा था, जिससे यहां जनसंख्या की बहुलता का प्रमाण मिलता है। मध्य–पाषाणयुगीन लोग अग्नि का नियमित उपयोग करते थे जिसकी पुष्टि यहां से प्राप्त राख, कोयला एवं जली हुई हड्डियों से होती है। लोग शैलाश्रय की सतह, सपाट

प्रस्तर खंडों से एवं विभाजन, अनगढ़ पत्थरों की दीवार बनाकर किया करते थे। धातु की खोज तथा ताम्र एवं लौह तकनीक के विकसित होने के पश्चात्, आखेटक जीवन जीने वाला गुफा–मानव, धीरे–धीरे समतल मैदानों में खेती करने वाला कृषक बनने लग गया था।

भीमबैठका के शैलाश्रय अर्द्धवृताकार हैं तथा इसका एक विशाल भाग बाहर की ओर निकला हुआ है। इस शैलाश्रय में कुल 453 आकृतियां चित्रित हैं, जिनमें से 252 आकृतियां, 16 प्रजातियों के विभिन्न पशुओं की हैं। यहां से प्राप्त बहुल मात्रा में वास्तविक एवं भव्य पशु–आकृतियों के चित्रण के कारण ही इसे 'जंतु शैलाश्रय' भी कहा जाता है। पशु–आकृतियों के अतिरिक्त विभिन्न क्रियाकलापों में लिप्त 90 मानव आकृतियां, एक चिड़िया, 6 अलंकरण, दो आयत, शंख लिपि में एक अभिलेख तथा 99 क्षतिग्रस्त आकृतियां भी इस शैलाश्रय में चित्रित हैं। यहां मध्य–पाषाण काल के कुछ चित्रणों के अतिरिक्त, अधिकतम चित्र ताम्राश्म काल तथा ऐतिहासिक काल से संबंधित हैं। एक के ऊपर एक 10 से अधिक बार, विभिन्न कालों में किए गए चित्रण के कारण ही शैलाश्रय के महत्व के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न होती है। ऐतिहासिक काल के चित्र मुख्यतः शैलाश्रय में दाएं और गेरुआ रंग से चित्रित हैं। रेखाचित्र में पैदल सैनिकों को हाथ में बड़ी तथा सीधी तलवार और दल के साथ चित्रित किया गया है।

भीमबैठका में हाथी दरवाजा, आदिमानव के हाथों के शिलाचित्र सबसे पहले मिले। यहां पत्थरों में भी कई प्रकार की आकृतियां देखने को मिल जाती हैं। एक जगह पत्थरों की

प्राकृतिक आकृति कछुए के समान है, जहां एक कछुए पर दूसरा कछुआ बैठा प्रतीत होता है। ये दो मानव आकृतियां– पुरुष और स्त्री की, यहां ये बिल्कुल किसी जटाजूट साधू की तरह दिखता प्रस्तर–खंड..... और अन्य जानवरों की आकृतियां तो अनेक स्थानों पर दिखती हैं.....। ये चट्टानें विस्मित कर डालती हैं। घने जंगलों में चारों ओर हरियाली और चट्टानी भूभागों तथा पथरीली चोटियों के बीच छिपी, प्राचीन परिसरों की रक्षा करती ऊंची चट्टानों के बीच स्थित भीमबैठका की गुफाएं..... अद्भुत.... अद्भुत....अद्भुत....!

अन्य अवशेष

भीमबैठका केवल अपनी गुफाओं और शैल–चित्रों के कारण ही विस्मित नहीं करता। इनके अलावा भी यहां असंख्य पुरातात्विक अभिलेख हैं, जिनकी खुदाई की गई है। शैल–कला और शैलाश्रयों के अलावा, भीमबैठका में भग्न दुर्ग की दीवारें, लघु स्तूप–जैसे अनेक ऐसे अवशेष भी मिले हैं, जो इस क्षेत्र में मौर्य ध्शुंग शासन–काल में बौद्ध प्रभाव को दर्शाते हैं। चट्टानों को काट कर बनाए गए बिस्तर, बौद्ध–संन्यासियों के प्रतीत होते हैं। यहां अनेक अभिलेख भी पाये गए हैं जो शुंग, कुशाण और गुप्त काल से संबंधित हैं। शंख लिपि के अभिलेख भी यहां देखने को मिलते हैं, जो अभी तक पढ़े नहीं जा सके हैं। यहां परमार–काल से संबंधित एक मंदिर के कुछ स्थापत्य–खंड भी देखने को मिले हैं।

जब हम भीमबैठका पहुंचे थे, तब भी आसमान पर सघन बादलों ने डेरा जमाया हुआ था और अब जब हम भीमबैठका से लौटने को हुए तो वही बादल बरसने को आतुर दिख रहे थे। वैसे वहां कुछ देर और रुकने की इच्छा थी, पर बरसने को आतुर दिख रही वर्षा रानी की मंशा भांप हमें वहां से निकलने को मजबूर होना पड़ा। ऐसे संकेत वहां के सुरक्षा–प्रहरी भी सीटी बजाकर पर्यटकों को निरंतर दे रहे थे क्योंकि बारिश होने पर वहां कहीं छिपने की जगह भी नहीं थी।

शाम का धुंधलका फैलने लगा था। हम वहां से वापस लौट रहे थे, पर ऐसा लग रहा था, जैसे हम सुदूर कहीं अतीत की अनन्त यात्रा कर लौटे हैं, जहां हजारों वर्ष पूर्व, इन गुफाओं में वास करने वाले मनुष्य के मानस और कार्यों के द्रष्टा होने का एक अनिर्वचनीय सुख भी हासिल हुआ है।

❐

करसन भाई पटेल : निरमा के संस्थापक

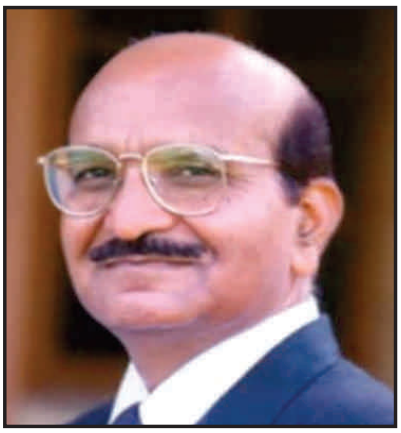

कामयाबी का मंत्र

कामयाब होना है तो कुछ अलग हट कर करना पड़ेगा।

जन्म – मेहसाना गांव (गुजरात)

शुरूआत – भू–गर्भ एवं खनन विभाग में लैब असिस्टेंट के रूप में

फ्यूचर प्लान – कपड़े धोने की आदतों को बदलना

पुरस्कार – 80 के दशक के अद्भुत उद्योगपति सम्मान, उद्योग रत्न व अन्य

Net Worth : US$4.9 billion (2021)

करसन भाई निरमा के संस्थापक हैं। उन्होंने अकेले ही हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड जैसी बहुराष्ट्रीय कंपनी को परास्त कर दिया। उन्होंने देश भर में साबुन की टिकिया के बजाय डिटर्जेन्ट पाउडर का फैशन चालू किया। हिंदुस्तान लीवर के एक शीर्ष एक्जीक्यूटिव ने करसन भाई के बारे में कहा था, ''करसन भाई ने पूरे देश की कपड़े धोने की आदतों को साबुन से डिटर्जेंट में बदल दिया।''

करसन भाई का जन्म गुजरात के मेहसाना गांव में बेहद साधारण किसान परिवार में हुआ था। उन्होंने अपने कैरियर की शुरूआत राज्य के भू–गर्भ एवं खनन विभाग में लैब असिस्टेंट की नौकरी से की। करसन भाई ने छह साल तक सरकारी दफ्तर में प्रयोगशाला तकनीशियन का काम किया। वहां वेतन अधिक नहीं था। जिसकी वजह से उनका मन नौकरी में नहीं लगता था। आमदनी बढ़ाने के लिए वे कुछ नया करना चाहते थे।

वे दिन में नौकरी करते और रात में घर पर डिटर्जेन्ट पाउडर बनाने का प्रयोग करते थे। सन् 1969 में करसन भाई ने अपने रिश्तेदारों और मित्रों से 1000 रूपये लेकर निरमा डिटर्जेन्ट पाउडर का उत्पादन आरम्भ किया। करसन भाई ऑफिस से आने के बाद देर रात तक डिटर्जेन्ट पाउडर बनाते थे और रविवार के दिन साइकिल पर निरमा डिटर्जेन्ट पाउडर के पैकेट लेकर गली–गली घूमते थे। महंगी टिकिया के बजाये सस्ता वाशिंग पाउडर खरीदने के लिए प्रेरित करते। इच्छुक महिलाएं उनके निरमा डिटर्जेन्ट पाउडर को पसंद करने लगी।

करसन भाई ने डिटर्जेन्ट की कीमत कम रखने के लिए इसकी गुणवत्ता से कोई समझौता नहीं किया था। यह जल्दी ही लोकप्रिय हो गया। करसन भाई निरमा का पैकेट देते समय ग्राहकों से कहते थे, ''पसंद न आये, तो पैसे वापस।'' उनकी यह नीति लोगों को बहुत पसंद आई। शुरूआती सफलता मिलने के बाद करसन भाई ने सरकारी नौकरी छोड़ दी और सन् 1977 में अहमदाबाद के पास छोटे से स्तर से डिटर्जेन्ट पाउडर बनाने का काम आरम्भ किया। उन्होंने अपनी बेटी निरूपमा के नाम पर अपने डिटर्जेन्ट पाउडर का नाम निरमा रखा।

देसी तकनीक से बना यह पाउडर गुणवत्तापूर्ण तो था ही साथ ही साथ इसकी कीमत भी अन्य डिटर्जेन्ट पाउडर से कम थी। जब निरमा वाशिंग पाउडर बाजार में आया तब डिटर्जेन्ट का देसी बाजार सीमित था। बाजार पर बहुराष्ट्रीय कंपनियों का कब्जा था। इसलिए करसन भाई ने घर–घर जाकर निरमा बेचने का तरीका अपनाया। करसन भाई ने दाम और क्वालिटी से पूरे डिटर्जेट मार्केट में तहलका मचा दिया। देसी डिटर्जेन्ट पाउडर का नया बाजार तैयार हो गया। बड़े–बड़े ब्रांड फीके पड़ गए और बाजार में निरमा सबसे बड़ा उत्पादक बन गया।

करसन भाई को एक के बाद एक सफलता मिलती गई। जब कम दाम वाले डिटर्जेन्ट पाउडर का बाजार में कब्जा हो गया तो निरमा ने प्रीमियम यानी मंहगें सेगमेंट में प्रवेश किया। प्रीमियम डिटर्जेट में 30 प्रतिशत और प्रीमियम साबुन में 20 प्रतिशत हिस्सेदारी हो गई। करसन भाई को कई सम्मान व पुरस्कार मिले। फेडरेशन ऑफ एसोसिएशन ऑफ स्मॉल स्केल इंडस्ट्रीज ऑफ इंडिया, नई दिल्ली ने उन्हें उद्योग रत्न से सम्मानित किया। गुजरात चौंबर्स ऑफ कॉमर्स ने उन्हें 80 के दशक के अद्भुत उद्योगपति के सम्मान से नवाजा।

❐

प्रस्तुतिः– एम.के. मजूमदार

आत्मकारक व राजयोग कारक ग्रह सूर्य

✍ उमेश उपाध्याय
आध्यात्मिक एवं ज्योतिष विशेषज्ञ

इस सचराचर जगत में मूल भगवान सूर्य नारायण ही हैं। देवता ,असुर, मानव आदि सभी इन्हीं से उत्पन्न है। इंद्र, चंद्र, रूद्र, ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव आदि जितने भी देवता हैं सब में इन्हीं का तेज व्याप्त है। अग्नि में विधिपूर्वक दी हुई आहुति सूर्य भगवान को ही प्राप्त होती है। भगवान सूर्य से ही वृष्टि होती है, वृष्टि से अन्न आदि उत्पन्न होते हैं और यही अन्न प्राणियों का जीवन है। इन्हीं से जगत की उत्पत्ति होती है और अंत में इन्हीं में सारी सृष्टि विलीन हो जाती है। ध्यान करने वाले इन्हीं का ध्यान करते हैं तथा यह मोक्ष की इच्छा रखने वालों के लिए मोक्षस्वरूप हैं। यदि सूर्य ना हो तो क्षण,मुहूर्त ,दिन ,रात्रि ,पक्ष ,मास ,ऋतु, अयन ,वर्ष तथा युग आदि काल–विभाग हो ही नहीं और काल विभाग का न होने से जगत का कोई व्यवहार भी नहीं चल सकता। इससे यह स्पष्ट है कि इस विश्व के मूलभूत कारण भगवान सूर्य नारायण ही हैं।

सूर्य अथाह ऊर्जा का एक स्रोत है। यह एक अनुशासन बनाने वाला ग्रह है। ग्रहों में सूर्य को राजा एवं चंद्रमा को रानी कहा गया है। सूर्य से ही पृथ्वी पर जीवन है, इसलिए ज्योतिष में सूर्य को एक प्रमुख ग्रह माना गया है। सूर्य आत्मकारक ग्रह है तथा पिता के कारक ग्रह भी हैं।

सूर्य से ग्रहों की दूरी अनुसार क्रमशः बुध शुक्र, पृथ्वी, मंगल, गुरु, शनि, अरुण और वरुण है। चंद्रमा पृथ्वी का उपग्रह है।

सूर्य स्वराशि, मित्र राशि एवं उच्च राशि में हो या 3, 6, 10 ,11 भावो में हो तो बलवान होता है और इसका फल अच्छा होता है।

सूर्य आकृति में सपाट एवं समतल, स्थिर, उष्ण, पुरुष लिंग, क्षत्रिय वर्ण, अग्नि तत्व, पूर्व दिशा का स्वामी एक क्रूर ग्रह है।

चंद्र, मंगल और गुरु उनके मित्र ग्रह हैं।

रविवार सूर्य का अपना वार है।

शुभ राशि मे सूर्य व्यक्ति को स्वस्थ, स्फूर्तिवान ,बुद्धिमान, विद्वान, दृढ़ प्रतिज्ञ, परोपकारी, महत्वाकांक्षी व कीर्तिवान बनाते हैं।

यह एक राज योग कारक ग्रह है।

बली सूर्य व्यक्ति को गौरव प्रदान करता है तथा मान सम्मान की वृद्धि करता है। राजपत्रित अधिकारी भी बनाता है।

सूर्य से बनने वाले प्रमुख योग निम्नवत हैः

(१) वेशि योग–सूर्य के स्थान से द्वितीय स्थान में चंद्रमा को छोड़कर कोई ग्रह बैठा हो तो उसे वेशि योग कहते हैं।

यदि सूर्य से द्वितीय स्थान में शुभ ग्रह हो तो व्यक्ति सुशील, व्याख्यानदाता, धनी, निर्भय और शत्रुओं पर विजयी होता है।

(२) वोशि योग –सूर्य से द्वादश भाव में चंद्रमा के अतिरिक्त कोई ग्रह होने से यह योग बनता है। शुभ ग्रह होने से जातक बुद्धिमान, विद्वान, दानशील, दयावान और कीर्तिवान होता है।

(३) उभयचरी योग–सूर्य से द्वितीय एवं द्वादश भाव में चंद्र के अतिरिक्त कोई ग्रह होने से यह योग बनता है। शुभ ग्रह होने से व्यक्ति विद्वान, गुणवान, धनवान, सुखी दानी होता है।

कुंडली के प्रत्येक भाव में सूर्य का फल निम्नवत है–

(१) लग्न में सूर्य हो तो जातक स्वाभिमानी ,क्रोधी,पित्त वात रोगी, चंचल,

प्रवासी, शक्तिशाली एवं महत्वाकांक्षी होता है।

(२) द्वितीय भाव में सूर्य जातक को मुखरोगी, संपत्ति वान, भाग्यवान, झगड़ालू,नेत्र कर्ण दंत रोगी एवं स्त्री के लिए कुटुंबियों से झगड़ने वाला बनाता है।

(३) सूर्य तृतीय भाव में हो तो पराक्रमी, प्रतापी, राज्य मान्य ,लब्ध प्रतिष्ठित एवं बलवान बनाता है।
(४) चतुर्थ भाव में सूर्य व्यक्ति को चिंता ग्रस्त, कठोर,पितृ धन नाशक, गुप्त विद्या प्रिय एवं मातृ सुख में कमी लाता है।

(५) पंचम भाव में सूर्य हो तो व्यक्ति को सम्मानित नेता ,उपदेशक, अल्पसंततिवान, सदाचारी, बुद्धिमान, दुखी, शीघ्र क्रोधी बनाता है।

(६) षष्ठम भाव में सूर्य व्यक्ति को शत्रुजयी, निरोगी, न्याय प्रिय, प्रभावशाली बनाता है। जीवन की सभी समस्याएं सहज हल हो जाती हैं।

(७) सप्तम भाव में सूर्य हों तो व्यक्ति को कठोर ,स्वाभिमानी ,आत्मरत एवं चिंता युक्त बनाता है। व्यक्ति भ्रमणशील होता है।

(८) सूर्य आठवें भाव में हो तो पित्तरोगी ,चिंता युक्त ,क्रोधी, धनी, सुखी और धैर्यहीन बनाता है।

(९) नवम भाव में सूर्य हो तो व्यक्ति को योगी ,तपस्वी, सदाचारी, नेता, साहसी, वाहन सुख युक्त एवं दानी बनाता है।

(१०) दशम भाव में सूर्य हो तो व्यक्ति को प्रतापी ,व्यवसाय कुशल, राज्य मान्य ,लब्ध प्रतिष्ठित, राज्य मंत्री, उदार ,ऐश्वर्य संपन्न एवं लोकमान्य बनाता है।
(११) सूर्य एकादश भाव में हो तो जातक को धनी ,बलवान ,सुखी, स्वाभिमानी, मितभाषी ,तपस्वी, योगी, सदाचारी ,अल्प संतति एवं उदर रोगी बनाता है।
(१२) द्वादश भाव में सूर्य हो तो जातक को एकांत प्रिय, परोपकारी, वाम नेत्र तथा मस्तक रोगी ,आलसी,परदेशवासी एवं कृश शरीर बनाता है।

सूर्य के अशुभ होने पर उपायः—
(१) सूर्य को जल दें,
(२) रविवार को उपवास रखें,
(३) रविवार को गेहूं गुड का दान करें,
(४) सदाचारी बने रहें,
(५) सूर्योदय से पहले जागें एवं दिन में ना सोए। ❐

कम पैसे के साथ शेयरों में निवेश कैसे शुरू करें

✍ निशांत कुमार प्रधान
इंटरनल ऑडिटर,
लेबर लॉ एडवाइजर एवं टैक्स प्रैक्टिशनर्स
संपर्कः 8210366618
ईमेल : neeaan7@gmail-com

शेयरों में निवेश लंबे समय तक चलने वाली संपत्ति बनाने के लिए निश्चित तरीकों में से एक है। सूचना, ज्ञान और विशेषज्ञ मार्गदर्शन की आसान उपलब्धता के साथ, आज अधिक से अधिक लोग इक्विटी निवेश के लाभों को महसूस कर रहे हैं। स्टॉक्स भी लोकप्रियता प्राप्त कर रहे हैं क्योंकि भारतीय अब रियल एस्टेट, सोना, फिक्स्ड डिपॉजिट और रियल एस्टेट निवेश पर अतिविश्वास से दूर जा रहे हैं।

कई नए निवेशक, युवा लोग और शुरुआती शेयर बाजार में शामिल होना चाहते हैं, लेकिन यह सुनिश्चित नहीं हैं कि कैसे शुरू करें। कई लोग विश्वसनीय जानकारी की कमी के कारण भी शुरू नहीं होते हैं या आर्थिक अनिश्चितता, अस्थिरता, जोखिम आदि के बारे में सारी खबरों के कारण इसमें शामिल होने से बहुत डरते हैं।

हालांकि, शुरुआती लोगों का शेयर बाजार से बाहर रहने के लिए सबसे आम कारण है कि वे नहीं जानते कि कैसे कम पैसे के साथ स्टॉक्स में निवेश शुरू करें। या, वे गलत मानते हैं कि इक्विटी निवेश के लिए बहुत सारी पूंजी की आवश्यकता होती है। एक गलत धारणा कईयों को शेयर बाजार में वित्तीय अवसरों से वंचित छोड़ देता है।

हम न केवल यह सोचते हैं कि यह संभव है, लेकिन यहां हम आप सभी को बताएंगे कि शुरुआती लोग कम पैसे के साथ स्टॉक्स में निवेश कैसे करें। एक बार जब आप आरंभ कर लें और अपने इक्विटी निवेश के साथ काफी देर तक रहें, तो आप यह भी सीख सकते हैं कि कम पैसे के साथ दिन का कारोबार कैसे शुरू किया जाए।

कम पैसे के साथ शेयरों में निवेश कैसे शुरू करें

शुरुआत के लिए, क्या आप जानते हैं कि आप 500 प्रति माह जितने कम रुपये के साथ स्टॉक्स में निवेश कर सकते हैं? विश्वास करना मुश्किल है? बस आराम करो और शुरुआती के लिए कम पैसे के साथ कैसे निवेश करें पर इस सरल गाइड को पढ़ें।

पहले सहेजें

यह प्रत्यक्ष लग सकता है लेकिन आप यह जानकर आश्चर्यचकित होंगे कि कितने लोग प्रत्यक्ष को भूल जाते हैं। आप पूछ सकते हैं, "मुझे पैसे की एक छोटी राशि निवेश करने के लिए बचाने की आवश्यकता क्यों है?" जवाब यह है कि पैसा आपके मासिक खर्च या ईएमआई से बाहर नहीं आना चाहिए और न ही आपको उस पैसे को किसी से उधार लेना चाहिए। तो निवेश करने से पहले एक निश्चित राशि बचाने की योजना बनाएं।

मूल बातें के साथ शुरू करें

चाहे यह खेल, नौकरी, व्यवसाय या शेयर व्यापार हो, आपको मूल बातों से ही शुरू करने की आवश्यकता है। इक्विटी निवेश या व्यापार शुरू करने से पहले, सुनिश्चित करें कि आपके पास कम से कम एक बुनियादी ज्ञान है कि शेयर बाजार कैसे काम करता है और स्टॉक्स पर कुछ ज्ञान प्राप्त करें जिनपर आप निवेश कर रहे हैं। मूल बातें जानना सुनिश्चित करता है कि आप एक निश्चित आधार पर अपनी शेयर निवेश यात्रा शुरू कर रहे हैं।

जानने के लिए महत्वपूर्ण चीजों में शामिल हैं:

–एक डीमैट खाता क्या है?
–एक व्यापारिक खाता क्या है?
–कैसे एक व्यापार करें?
–नुक्सान प्रतिबन्ध आदेश क्या है?
–लक्ष्य बिक्री और खरीद कीमतें क्या है?
–शुरुआती तौर पर मार्जिन व्यापार, पैनी स्टॉक्स इत्यादि जैसी चीजों से बचे।

भावनाओं को संभालना सीखें

कई शुरुआती लोगों के लिए भावनाएं एक बाधा हो सकती हैं यदि वे इसे संभालने में अच्छे नहीं हैं। विशेष रूप से भय, लालच, चिंता और अत्यधिक–विश्वास इस तरह की भावनायें हानिकारक हो सकता है यदि आप शेयर बाजार में हैं। अपनी भावनाओं को नियंत्रित करना जानें और यह आपको अपने पूरे जीवन में मदद करेगा न सिर्फ शेयर बाजार में।

दीर्घकालिक लक्ष्य निर्धारित करें

शेयर बाजार में निवेश करना एक 'त्वरित अमीर' योजना नहीं है और किसी को भी आपको अन्यथा बताने न दें। यदि आप सीखना चाहते हैं कि शुरुआती लोगों के लिए स्टॉक्स में निवेश कैसे करें, लंबी अवधि के लक्ष्य से शुरू करें, जब तक कि आप दिन के व्यापार में शामिल नहीं होना चाहते हैं।

यहां तक कि अगर आपका उद्देश्य सीखना है कि दिन के कारोबार को कम पैसे से कैसे शुरू किया जाए, तो यह सोचने की गलती न करें कि आप कुछ ट्रेडस को करके समृद्ध होंगे। चाहे आप लंबी अवधि के लिए अपने शेयरों को रखना चाहते हैं या दिन के व्यापार शुरू करना चाहते हैं, एक पेशेवर की तरह सोचें, शौकिया नहीं। ❐

जिंदगी का फलसफा

बदलते मौसम की तरह बदलती रहती है जिंदगानी

✍ डॉ. कुमकुम वेदसेन
मनोविश्लेषक, नवी मुंबई
संपर्क: 8355897893
ईमेल : k.vedasen@gmail.com

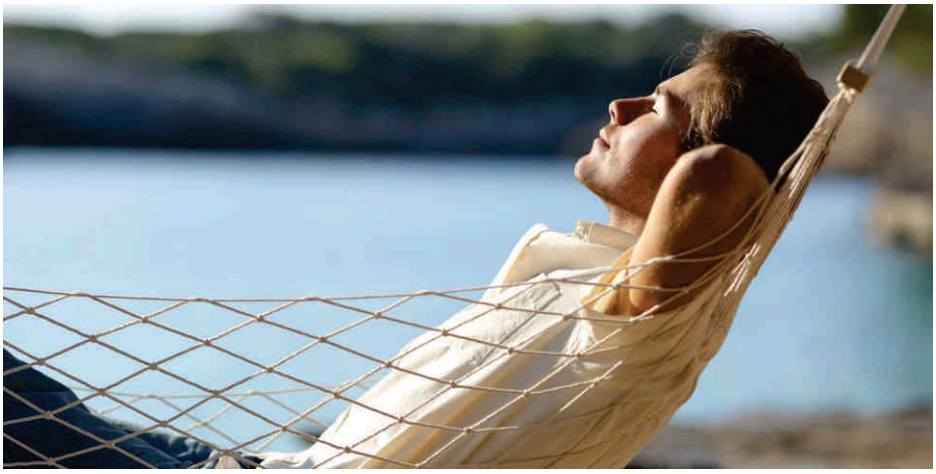

वर्षों से यह देखती और सुनती आ रही हूं आश्चर्य तब होता है जब जिंदगी एक पड़ाव पर आकर विराम ले लेती है और फिर जीवन का सफर एक याद बनकर मानस पटल पर चलचित्र की भांति चलता रहता है। विराम की अवस्था में दो दो पहलू नजर आते रहते हैं। एक वह जिंदगी जिसने विराम लिया है और वह मौन हो गया पर दूसरी वह जिंदगी जो सांसारिक माया मोह से जीवन में विचलित हो रही है जिसकी वजह से उन्माद, क्रोध, चिंता, तनाव उनके सहयोगी बन उन्हें उत्तेजित कर रहे हैं

इस उन्माद चिंता तनाव को जीवन से अलग करना आवश्यक है तभी हम संतुलित और खुश रह सकते हैं पर यह हवा की तरह है कब जीवन में प्रवेश कर जाते हैं जिसका अंदाजा भी नहीं लिया है। इन्हें रोकने का सही तरीका यह है कि अपने सोच के तरीकों में वदलाव करना होगा, मन को स्थिर बनाना होगा संकल्प के माध्यम से उठते हुए उन्माद की तीव्रता को कम करना होगा धीरे–धीरे यह आवेग संतुलित होते जाएंगे। नियम तो कठिन लगते हैं पर अपनाने पर आसान और सुखद होते हैं। सारी चिंताओं को देखने वाले ईश्वर है ना, हमें तो सिर्फ धैर्य रखना है, रास्ते तो अपने आप निकलते जाएंगे सिर्फ वाणी में मधुरता और ठहराव लानी है। विद्रोह की भावना को दूर करना है समझौता ही समाधान है। कभी मौन रहे कभी हंस कर टाल दें और कभी नजर अंदाज कर दें यदि आपको नहीं पसंद आए। विद्रोह और बदले की भावना ही जीवन में बेचैनी पैदा करती है।

अकेलेपन को दूर करने के लिए हमेशा लोगों से मिलते रहे। जहां भी अपनापन मिले उन्हें गले लगाते रहे। उम्र की परवाह न किया जाए तो बेहतर हैं।

प्रकृति भी एक अच्छा माध्यम है जो अकेलेपन को दूर करती है।

जिन्हें लेखनी का शौक है उनके लिए तो जीवन के सुखद और दुखद अनुभव किताबों के पन्नों में अंकित कर अकेलापन को दूर कर सकते है। इतिहास इसी तरह बनता है बहुत विशद व्याख्या ना हो पर लेखनी हमें एक सहारा अवश्य देती है ।

❐

नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी केन्द्र सरकार के कामकाज की लगातार समीक्षा कर सकेंगे

✍ जितेन्द्र कुमार सिन्हा
पूर्व अध्यक्ष
बिहार श्रमजीवी पत्रकार यूनियन

लोक सभा चुनाव परिणाम में 99 सीट लाकर और गठबंधन की सीट को मिलाकर कांग्रेस इतरा रही है, जबकि कांग्रेस को इतराने से बाज आना जरूरी है। कांग्रेस की इस इतराहट से, उसे बार–बार मात खाना पड़ रहा है। यही कारण है कि संसद में प्रधानमंत्री ने अपने तर्क से उनकी बोलती बंद कर दी है।

नरेन्द्र मोदी को देश की जनता ने नकारा नहीं है। लेकिन एनडीए की सरकार को तीसरी बार केन्द्र की सत्ता में आने की बहुमत मिली है और केन्द्र में भाजपा गठबंधन की सरकार नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में बनी है। इसबार भाजपा गठबंधन सरकार के लिए विपक्ष की अवहेलना करना आसान नहीं होगा। क्योंकि इसबार मजबूत विपक्ष है। मजबूत विपक्ष होने के कारण केन्द्र सरकार को अपना रवैया नरम रखना होगा। इसका प्रमाण भी सदन में देखने को मिल रहा है।

राहुल गांधी को नेता विपक्ष बनाया गया है। नेता विपक्ष के तौर पर राहुल गांधी की पुरानी छवि टूटने की और एक नयी छवि बनने की उम्मीद जतायी जा रही है। बदले हुए हालात में केन्द्र की भाजपा सरकार पिछले कार्यकाल की तरह विपक्ष को दरकिनार कर के सदन की कार्यवाही नहीं चला पायेगी, जो सदन में दिख रही है। मजबूत विपक्ष रहने और राहुल गांधी के प्रतिपक्ष का नेता बनने से केन्द्र की नरेन्द्र मोदी सरकार को अब अपने नजरिए में फेरबदल करना होगा।

18वीं लोकसभा सत्र की शुरुआत हो चुकी है। लगभग सभी सांसद शपथ ले चुके हैं। लोकसभा स्पीकर चुन लिए गए हैं और नेता प्रतिपक्ष भी घोषित हो चुके हैं। केन्द्र की सरकार तीसरी पारी शुरू कर चुकी है। विपक्ष सदन में अपना दबाव लगातार बनाए हुए है लेकिन विपक्ष के दबाव के बावजूद केन्द्र सरकार पोछे नहीं हटेगी, ऐसा दिख रहा है। आधिकारिक रूप से राहुल गांधी प्रतिपक्ष के नेता हैं और सदन में जब नेता प्रतिपक्ष बोल रहे थे, तब प्रधानमंत्री भी सदन में मौजूद रहे। यही भारत की संसदीय परंपरा रही है। ऐसा सदन में देखने को मिल रहा है।

एनडीए में भाजपा थोड़ी कम संख्या जीत कर नरेन्द्र मोदी को फिर से तीसरी बार देश का प्रधानमंत्री बनाया गया हैं। जो लोग नरेन्द्र मोदी के राजनीतिक व्यक्तित्व की बारीकियों को गहराई तक समझते हैं उन्हें शायद यह समझाने की जरूरत नहीं है कि सत्ता और सरकार में आकर नरेन्द्र मोदी किसी भी फ्रंट पर पराजय का मुंह देखने वाले नहीं हैं।

आपातकाल की बरसी पर विपक्षी दलों के हंगामे के बीच सदन में निंदा प्रस्ताव पारित किया गया। अपने प्रस्ताव में स्पीकर ने कहा कि यह सदन 1975 में, देश में आपातकाल लगाने के निर्णय की कड़े शब्दों में निंदा करता है। इसके साथ ही, हम उन सभी लोगों की संकल्य शक्ति की सराहना करते हैं, जिन्होंने आपातकाल के समय अभूतपूर्व संघर्ष किया और भारत के लोकतंत्र की रक्षा की।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि भाजपा सरकार का एकमात्र लक्ष्य भारत सर्वप्रथम है। उन्होंने कहा है कि लंबे समय तक तुष्टिकरण की राजनीति का मॉडल देश ने देखा है, लेकिन उन्होंने तुष्टिकरण की बजाय सन्तुष्टीकरण पर देश चलाया है। उन्होंने यह भी कहा कि विपक्ष की साजिश, षड्यंत्र, अराजकता और शोर शराबा की राजनीति से डरने वाले नहीं हैं। उनकी सरकार संकल्प की सिद्धि को पूरा करेगी।

कांग्रेस नेतृत्व को चुनावी मूड से बाहर निकलकर वास्तविक धरातल पर चलने की आदत डालनी होगी। उसे अधिक उत्साह दिखाकर केंद्र सरकार को पलटने के पैतरे छोड़ देने और लोकतांत्रिक मूल्यों की मर्यादाओं के साथ आगे का सफर कालांतर में तय करना ज्यादा आवश्यक है। यही उसे जनता का भरोसा जीतने में कामयाब भी बना पाएगा।

18वीं लोकसभा के लिए निर्वाचित सदस्यों को शपथ दिलाये जाने के दौरान एआईएमआईएम के नेता असदुद्दीन ओवैसी ने शपथ लेने के बाद नारा लगाया जय भीम, जय तेलंगाना और फिर जय फिलस्तीन कहा। फिर उन्होंने अल्लाह– ओ–अकबर के भी नारे लगाये। इसपर भाजपा के कई सदस्यों ने आपत्ति जाहिर की। उन्होंने विरोध दर्ज करवाया। इसपर प्रोटेम स्पीकर ने कहा कि यदि ओवैसी ने कोई आपत्तिजनक बात कही है उसे कार्यवाही के रिकार्ड से हटा दिया जायगा। ओवैसी हैदराबाद से लोकसभा से निर्वाचित हुए हैं। वह पांचवी बार सांसद बने हैं।

नेता प्रतिपक्ष की सदन में महत्वपूर्ण भूमिका और संवैधानिक अधिकार होते हैं। इनमे कटौती करना सत्तारुढ़ दल के लिए संभव नहीं है। यह एक सम्मानीय पद है। राहुल गांधी के

लिए भाजपा जिस तरह का वक्तव्य हर वक्त इस्तेमाल करती रही है, वह अब संभव नहीं होगा। नेता प्रतिपक्ष की हैसीयत सत्तारुढ़ दल के नेता से कम नहीं होती है। राहुल गांधी सदन में विपक्ष की आवाज उठाते हुए नजर आने वाले हैं। लोकसभा चुनाव के नतीजों ने बहुत कुछ बदलकर रख दिया है। राहुल गांधी के तौर पर पूरे दस सालों बाद सदन के भीतर विपक्ष को अपना सेनापति मिला है।

नेता प्रतिपक्ष न सिर्फ अपनी पार्टी को, बल्कि पूरे विपक्ष का नेतृत्व करता है। नेता प्रतिपक्ष कई जरूरी नियुक्तियों में प्रधानमंत्री के साथ बैठता है। मतलब यह है कि अब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और प्रतिपक्ष नेता राहुल गांधी साथ मिलकर कई फैसले लेंगे। दोनों के राय से फैसले लिये जायंगे। चुनाव आयुक्त, केन्द्रीय सतर्कता आयोग के अध्यक्ष, मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष, इन सभी पदों का चयन एक पैनल के जरिये किया जाता है, जिसमें प्रधान मंत्री और नेता प्रतिपक्ष शामिल रहते हैं।

अब तक राहुल गांधी कभी भी नरेन्द्र मोदी के साथ किसी पैनल में शामिल नहीं हुए हैं। राहुल गांधी भारत सरकार के खर्चों की जांच करने वाली लोक लेखा समिति के अध्यक्ष होंगे। अब राहुल गांधी सरकार के कामकाज की लगातार समीक्षा करेंगे। वह ये जानने की कोशिश करेंगे कि सरकार कहां पर कितना पैसा खर्च कर रही है।

इतना ही नहीं राहुल गांधी दूसरे देशों के राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री को राष्ट्रीय मुद्दों पर अपना दृष्टिकोण देने के लिए भारत बुला सकते हैं। मतलब कि यदि वह किसी मुद्दे पर विदेशी मेहमानों से चर्चा करना चाहें तो वह ऐसा कर सकेंगे। नेता प्रतिपक्ष के तौरपर राहुल गांधी अब प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) और सीबीआई जैसी केंद्रीय जांच एजेंसियों के प्रमुखों के चयन में भी अहम भूमिका निभा सकते हैं। वह पिछले दस साल से इन एजेंसियों पर काफी आरोप लगाते आये हैं। नेता प्रतिपक्ष बनने के बाद राहुल को पद भी मिला है और उनका कद भी बढ़ गया है। नेता विपक्ष के तौर पर राहुल गांधी को कई अधिकार और सुविधाएं मिलेंगी।❐

अन्नानास और सेब की जलेबी

✍ किरण उपाध्याय
रेसिपी एक्सपर्ट

यह व्यंजन बहुत ही आसान और तुरंत बन जाने वाला है। यह बहुत ही स्वादिष्ट और फायदेमंद होता है। आप इस व्यंजन का लाभ सभी मौसम में उठा सकते हैं।

सामग्रीः—

एक अन्नानास ,एक सेब ,एक संतरा, चार पांच छोटी इलायची, सूजी दो बड़े चम्मच, अरारोट या मैदा दो बड़े चम्मच रिफाइंड या घी डालने के लिए।

चाशनी के लिएः—

दो कटोरी चीनी, आधा कटोरी पानी, चार—पांच छोटी इलायची, एक संतरे का जूस या कोई एसेंस।

बनाने की विधिः—

सर्वप्रथम हम अन्नानास और सेब को गोल आकार में काट लेंगे (आप किसी भी आकर में काट सकते हैं)। हम अन्नानास और सेब के बीच के हिस्से (कड़े) को चाकू या आलू छिलने वाले की मदद से निकाल लेंगे। अब हम सेब और अन्नानास के टुकड़ों में टूथपिक या कांटे की सहायता से छेद कर लेंगे जिससे सेब और अन्नानास चाशनी को अच्छी तरह से शोख लेंगे। हम संतरे को बीच में से काटकर निचोड़ कर उसका रस निकालकर रख लेंगे।

चाशनी बनाने की विधिः—

चाशनी बनाने के लिए एक बर्तन में दो कटोरी चीनी ,आधा कटोरी पानी डालकर अच्छी तरह से मिला लेंगे। चीनी पानी अच्छी तरह से मिलने के बाद उसे चूल्हे पर मध्यम आंच पर चढ़ाकर करीब 5 से 7 मिनट उबाल लेंगे। अब हम चाशनी में छोटी इलायची और संतरे का रस या कोई एसेंस डालकर 1 मिनट तक उबाल लेंगे। चाशनी में संतरे का स्वाद बहुत अच्छा आता है।

अनानास और सेब की जलेबीः—

एक गहरी प्लेट में हम दो बड़े चम्मच सूजी, दो बड़े चम्मच अरारोट या मैदा तीन चम्मच पानी या आवश्यकता अनुसार पानी, मिलाकर एक गाढ़ा घोल तैयार कर लेंगे। गैस जलाकर पैन में घी या रिफाइंड डालकर गरम करें। अन्नानास और सेब के टुकड़ों को घोल में अच्छी तरह से लपेटकर धीमी आंच पर सुनहरा होने तक तल लें। अब गरम चाशनी में तले हुए अन्नानास और सेब को डालकर 1 मिनट बाद निकाल लें। सर्व करते समय बीच में एक चेरी के टुकड़े से सजा दें। आप अन्नानास और सेब को तलकर रख भी सकते हैं और जब सर्व करना हो तो चाशनी गर्म करके उसमें डालकर निकालकर कर रख सकते हैं।

जूसी अन्नानास और सेबः—

हम उबलते हुए चाशनी में धीमी आंच पर अन्नानास और सेब के कुछ टुकड़े डालकर करीब 5 मिनट तक उबाल लेंगे और 5 मिनट बाद इन टुकड़ों को चाशनी में से निकाल लेंगे और सर्व करते समय बीच में चेरी के टुकड़े से सजा सकते हैं। आप चाहें तो इसे फ्रीज में एयरटाइट डब्बे में रख सकते हैं और ठंडा हो जाने पर आप इसका आनंद उठा सकते हैं।

स्रोतः किरण उपाध्याय की रसोई यूट्यूब चैनल

❐

कहानी

एहसान

✍ सपना चन्द्रा
कहलगांव, भागलपुर, बिहार

"मैं इस आदमी की कुछ नहीं लगती,सुना आपने !.और ये रिश्ते की दुहाई देना बंद कीजिए आप मुझे।"

स्वरा,जिसके स्वर में सुर नदी की तरह बहती थी। शास्त्रीय संगीत में जिसने खुब ख्याति पाई थी,आज उसकी आवाज में कितनी कठोरता दिख रही थी।

जिंदगी उसके सामने ऐसी लकीर खिंचेगी जो आर या पार की होगी, उसने कभी सोचा भी नहीं था। अचानक से उठे इस एक सवाल ने उसकी जिंदगी में भूचाल ला दिया था।

एक दिन अपनी माँ के साथ किसी अजनबी चेहरे को देख उसने सवाल किया।

"ये कौन है माँ !.आप इन्हें यहाँ क्यूँ ले आई हैं..??

आपके अस्पताल में इतनी जगह तो होती है कि मरीज वहाँ पड़ा रहे फिर भी !"

स्वरा की माँ रतना सरकारी अस्पताल में नर्स का काम किया करती थी।

कुछ दिन पहले जिस मरीज के देखभाल करने की जिम्मेवारी उसे मिली थी उस आदमी को कुछ लोगों ने सड़क किनारे जख्मी हालत में पाया था।

लोगों ने उसे पुलिस की मदद से सरकारी अस्पताल पहुँचा दिया था और तब सीनियर डॉक्टर ने रतना से उस मरीज की देखभाल करने की बात की थी।

रतना ट्रे में ड्रेसिंग का सामान लिए कमरे में प्रवेश करती हुई उसकी ओर बिना देखे ही उस जख्मी व्यक्ति से पूछती है, "अब कैसा महसूस कर रहे है.?

देखिए! डॉक्टर साहब ने मुझे आपकी देखभाल करने को कहा है इसलिए अच्छे बच्चे की तरह रहना है।"

रतना की बात सुनकर वह मरीज हँस पड़ा।

"मैं और बच्चा SSS..हा..हा..हा।"

उस मरीज की जानी–पहचानी आवाज से रतना चौंक पड़ी थी।

येSS..येSS हरीश की आवाज है

वह उस तरफ मुड़कर देखती है।

हरीश से रतना की मुलाकात इस तरह होगी,उसने कभी सपने में भी नहीं सोचा था।

"रतना तुम...? यहाँ इस अस्पताल में काम करती हो..?"

"हाँ!.मैं यहाँ काम करती हूँ. जीने के लिए तो कुछ करना ही होगा।"

तभी रतना की फोन की घंटी बजती है। स्वरा का फोन था। उसने ये बताने के लिए फोन किया था कि उसे अपने एक दोस्त के यहाँ जाना है।

"स्वरा जल्दी आ जाना,समझी।" और फोन कट हो गया।

"ये स्वरा कौन है रतना..?"

"मेरी बेटी है।" रतना ने जवाब दिया।

"ओहह अच्छा.!" और उसके पिता कहाँ है..?"

"यहीं पर हैं वो..!"

"अच्छा !.वो भी इसी अस्पताल में हैं..?"

"हाँ !..इसी अस्पताल में हैं।"

हरीश बिल्कुल गुमसुम सा हो गया। अब उसने कोई और सवाल नहीं किया।

दिन गुजरते रहे, रतना अपना काम करती और चली जाती। उधर हरीश ने भी फिर कभी अपना मुँह नही खोला।

जहाँ उसके बाहरी जख्म सूख रहे थे वहीं भीतर का जख्म हरा हो रहा था।

आखिर अस्पताल से जाने का वक्त भी आ गया। डॉक्टर ने उसकी अच्छी हालत देख छुट्टी कर दी।

"अब आप घर जा सकते हैं .. मि०.हरीश! सब कुछ ठीक है।"

"सिस्टर रतना ...आपकी सेवा बहुत काम आई।"

हरीश घर की बात सुनकर ठहर सा गया था। "कौन सा घर !.मेरा कोई घर नही।"

डॉक्टर से कहे उसके शब्द को रतना ने सुन लिया था।

"सबकुछ तबाह हो गया मेरा डॉक्टर! .शायद किसी की आह लग गई।"

हरीश थके कदमों से बाहर निकल आता है। अस्पताल के मेन गेट के पास खड़े –खड़े इधर–उधर देखता है। तभी रतना उसके पास आती है और अपने घर ले जाने की बात करती है।

"नहीं !..नहीं! मैं तुम्हारे घर कैसे जा सकता हूँ। मेरी वजह से तुम्हारा पारिवारिक मामला बिगड़ सकता है। तुम्हारे पति और तुम्हारी बेटी के कई सवाल होंगे। क्या जबाव दोगी?"

रतना के चेहरे पर एक फीकी सी मुस्कान तैर जाती है।

"ओहह.!.तुमने समझा कि मैंने दूसरी शादी कर ली है और वो बेटी.. SSS।

तुम कल भी गलत थे हरीश और आज भी..!

स्वरा हमारी बेटी है।

मैं तो तुम्हें माफ कर चुकी पर तुम्हारी बेटी जो पिता के होते हुए भी बिना पिता के रही, इसका जबाव कौन देगा।"

हरीश अपने सर को दीवार पर पीटता हुआ पश्चाताप कर रहा था। "मैं कैसा बदनसीब पिता हूँ जो अपने ही हाथों अपनी दुनिया जला ली।"

रतना उसे रोकती है और अपने साथ घर ले जाती है।

दरवाजे पर खड़ी स्वरा अपनी माँ के साथ किसी अजनबी को देख आश्चर्य करती है ... ।

"ये कौन है माँ..??"

रतना बोल पाती इससे पहले ही हरीश अपने हाथ जोड़कर कहता है।

"मैं तुम्हारा पिता हूँ। तुमदोनों का मुजरिम हूँ। माफ कर दो मुझे मेरी बच्ची।"

"खबरदार! जो मुझे अपनी बेटी कहा। मैं सिर्फ अपनी माँ को जानती हूँ।

मैंने आजतक कभी नहीं पूछा कि मेरे पिता कौन हैं और कहाँ हैं क्यूँकि मैं उन्हें तकलीफ नहीं पहुँचाना चाहती थी। पर जानना जरुर चाहती थी।

अक्सर छुपकर माँ को आपके नाम की सिंदूर लगाते देखती पर मैंने कभी जाहिर नहीं किया।"

रतना स्वरा की बात सुनकर अवाक हो गई थी।

"सब जानती थी पर कभी नहीं पूछा मुझसे..अकेले ही जुझती रही. ओहहहह...मेरी बच्ची।"

"माँ मैं आपका हक नहीं छीनना चाहती थी। अगर आपने इन्हें लाया है तो कोई वजह भी जरुर होगी।

आपके फैसले से मुझे कोई आपत्ति नहीं पर मैं इनकी कोई नहीं, कभी भी नहीं।

आपने माफ करके एहसान कर दिया, मुझसे नहीं हो पायगा।"

"स्वरा!.इस सिंदूर की वजह से ही आने वाले खतरों से बचती रही हूँ। इसलिए मुझे अपने फर्ज निभाने ही होंगे। इंसानियत को एहसान नहीं कहते।"

❐

देश के बांध मरम्मत को तरस रहे, वहीं विदेशों में बांध तोड़े जा रहे, आखिर क्यों?

✍ डॉ. बी.आर.नलवाया
शोध निदेशक
प्रोफेसर एवं एचओडी डिपार्टमेंट ऑफ कॉमर्स,
गवर्नमेंट पीजी कॉलेज, मंदसौर, मध्यप्रदेश

✍ प्रो. योगेश कुमार पटेल,
शोधार्थी
मंदसौर, मध्यप्रदेश

आने वाले जून–जुलाई 2024 से मध्यप्रदेश सहित देश के कई इलाकों में भारी बारिश होगी जिससे देश के विभिन्न भागों मे तबाही देखने को मिल सकती है। पिछली बारिश में नर्मदा नदी पर बने बांध का जल स्तर लगातार बढ़ा है। बिहार में तो हर साल 11 जिलों में बाढ़ के कारण बांधों का टूटना या फिर क्षमता से ऊपर बहने वाले बांधों के दरवाजे खोलने पड़ते हैं। बांध सुरक्षा कानून 2019 जो की राज्यसभा में पारित होकर 3 सितंबर को ही अस्तित्व में आ चुका है, इसके तहत देश के 5745 बड़े बांधों की सुरक्षा का जिम्मा राज्यों के साथ–साथ केंद्र सरकार के पास भी रहेगा। एक रिपोर्ट के अनुसार मध्यप्रदेश में 906 (देश के बांधों का 16 प्रतिशत) बड़े बांध है, जबकि सबसे ज्यादा 2394 बड़े बांध महाराष्ट्र एवं फिर 623 गुजरात में है। इन तीन राज्यों के बाद सिर्फ चार राज्यों में जहां 200 से ज्यादा बड़े बांध है। इस कानून का असर सबसे ज्यादा इन्हीं राज्यों पर होगा। अब इन बांधो की 2024 मानसून के पहले पर्याप्त निगरानी व मरम्मत तथा सुरक्षा की आवश्यकता है।

29–30 अगस्त 2022 को धार जिले के नवनिर्मित बांध में आई दरार के चलते अब एक बार फिर से देश के सभी बड़े बांधों के आसपास रहनेवाले बस्ती के लोगों में 2024 की बारिश से दहशत बन सकती है। ऐसी ही एक स्थिति ने 14–15 सितंबर 2019 के दरमियान रात में कैचमेंट एरिया में लगातार बारिश ने मंदसौर जिले के गांधी सागर बांध को खतरे के मुंह पर खड़ा कर दिया था और यह टूटने के कगार पर था। 2019 में हुई अतिवृष्टि के चलते गाँधीसागर बांध में क्षमता से ज्यादा पानी आने से वह ऊपर से बिजलीघर में घुस गया था। इससे राजस्थान और मध्यप्रदेश के आठ जिलों में रहनेवाली 40 लाख की आबादी का सब कुछ बर्बाद हो सकता था। बांध का स्पिलवे अपनी क्षमता से तीन से चार गुना ज्यादा पानी झेलने के कारण क्षतिग्रस्त हो चुका है। यही नहीं विगत मानसून के दौरान 13 बार बांध से निकाला गया पानी इस स्पिलवे की क्षमता को पार कर चुका है।

स्मरण रहे कि भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (कैग) की रिपोर्ट में यह चेतावनी दी गई थी कि गांधी सागर बांध की जल्दी मरम्मत नहीं कराई गई तो इसका टूटना तय है। मध्य प्रदेश की प्रमुख नदी चंबल पर बने गांधीसागर बांध का लोकार्पण 19 नवंबर 1960 में तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने किया था। गांधीसागर बांध अपने जीवन का 64वां वर्ष पूर्ण करने जा रहा

है। इस 64 साल पुराने बांध की मरम्मत के लिए 14 साल पहले ही पहल हो चुकी थी। यदि इस बांध की जल्द से जल्द मरम्मत नहीं कराई गई और यदि यह बांध टूटता है तो इसमें राजस्थान के कोटा, सवाई माधोपुर, करौली, धौलपुर और मध्यप्रदेश के शिवपुर, मुरैना और भिंड में भारी तबाही हो सकती है। साथ ही बांध के नीचे मौजूद राणाप्रताप सागर और कोटा बैराज समेत रावतभाटा न्यूक्लियर पावरप्लांट पर भी खतरा मंडरा सकता है।

एक शोध रिपोर्ट में उल्लेख है कि दुनियाभर के करीब 50 हजार बड़े बांधों में से ज्यादातर बांध 1950 से 1985 के बीच में बने है। इनके मुताबिक बांध की सुरक्षित आयु 50 साल होती है लेकिन सही रखरखाव के बाद यह आयु 50 साल और बढ़ सकती है। दूसरी तरफ देश में विगत वर्षों में निर्मित हुए बांधों के टूटने के अनेको कारण जिम्मेदार है जिनका उल्लेख यहां लाजमी नहीं है।

इसी तरह से श्योपुर जिले में वर्ष 1908 में निर्मित वीरपुर बांध, वर्ष 1910 में सिवनी जिले में निर्मित रुमल बांध और वर्ष 1913 में धार जिले में निर्मित माही बांध सहित प्रदेश के 27 बांधो की सरकार द्वारा मरम्मत करवाना बहुत आवश्यक हो गया है, क्योंकि इन बांधो की दीवार में कहीं–कहीं क्रैक आ चुके हैं साथ ही कहीं–कहीं मिट्टी भी धस रही है। सरकार ने इनके लिए 551 करोड रुपए मंजूर भी कर रखे हैं। प्रदेश में ज्यादातर बांध 35 साल पुराने हैं जबकि वीरपुर, रुमल और माही बांध को बने 100 वर्ष से अधिक हो चुके हैं। बारिश के पहले इन बांधों की मरम्मत बहुत आवश्यक है, क्योंकि कैग ने इन बांधों की वर्तमान स्थिति पर आपत्ति ली थी और मरम्मत कराने की सलाह भी दी थी।

दूसरी तरफ विकसित देश बांधों के भविष्य पर चिंतन करते हुए इनकी उपयोगिता पर प्रश्नचिन्ह लगा रहे हैं। अमेरिका इनमें सबसे आगे हैं। कैलिफोर्निया में 8 बांधों में से 4 को तोड़ने का कार्यादेश हो चुका है। विदेशो में बांध बनाने वाली कंपनियों का कहना है कि पनबिजली से कमाई से ज्यादा रखरखाव का खर्चा होता है। इस तरह 1976 से अब तक अमेरिका में 1700 बांध तोड़े जा चुके हैं। वर्ष 2004 के बाद से अमेरिका में बड़े बांधों को बनाने पर रोक लगा दी गई है। इससे यह स्पष्ट हो रहा है कि लागत, उत्पादन, संसाधन आदि मामलों में ऐसे बांध घाटे का सौदा सिद्ध हो रहे हैं। विश्व बांध आयोग के अध्ययन में स्पष्ट है कि ऐसे निर्माण उम्मीद पर खरे नहीं उतर रहे हैं। यूरोप में भी वर्ष 2016 से ही बांध तोड़े जा रहे हैं। वर्ष 2022 में ही यूरोपीय नदियों पर बने 325 बांध तोड़ दिए गए हैं। यहां खास बात यह है कि जिन नदियों पर बांध तोड़े गए है, वहां का जलीय जीवन एवं पर्यावरण भी तेजी से बदलने लगा है। साथ ही नदियां भी अपने पुराने स्वरूप में आने लगी है जिससे उसके आसपास हरियाली भी बढ़ रही है। ❐

फिल्म जहांगीर नेशनल यूनिवर्सिटी को लेकर विवाद जारी, संगम नगरी तक भी पहुंची आंच

मुंबई ब्यूरो, ऐसा लगता है कि डायरेक्टर विनय शर्मा की जहांगीर नेशनल यूनिवर्सिटी का विवादों से गहरा नाता है। थोड़े बहुत किंतु–परंतु के बाद सेंसर बोर्ड ने हरी झंडी दे दी और फिल्म भी सिनेमाघरों में रिलीज हो गई। प्रयागराज के इलाहाबाद विश्वविद्यालय और दिल्ली के जेएनयू के वामपंथी छात्रों समेत कई शहरों में इसका कड़ा विरोध देखा जा रहा है।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय के छात्रसंघ, उपाध्यक्ष और एनएसयूआई के राष्ट्रीय सचिव अखिलेश यादव का कहना है, ''नीट और यूजीसी– नेट में धांधली के बाद सीएसआईआर की परीक्षा रद्द कर दी गई थी। इन सभी मुद्दों से ध्यान भटकाने के लिए एक बार फिर से लोगों का ध्यान बरमलाने की कोशिश की जा रही है।'' इस देश के जे.एन.यू. जैसे शीर्ष शिक्षण संस्थान को निशाना बनाकर जे.एन.यू. (जहाँगीर नेशनल यूनिवर्सिटी) के नाम पर एक साम्प्रदायिक एवं दमन विरोधी फिल्म रिलीज की जा रही है जिसका उद्देश्य जवाहरलाल की संस्कृति एवं गौरवशाली इतिहास को कुचलना है। इस फिल्म के निर्देशक विनय शर्मा हैं, हम राष्ट्रीय स्वयंसेवक की विचारधारा पर बनी इस फिल्म का विरोध करते हैं। इलाहाबाद विश्वविद्यालय एनएसयूआई इकाई और संयुक्त छात्र संगठन मोर्चा ने फिल्म के निर्देशक का पुतला फूंककर विरोध दर्ज कराया ।

इसी तरह का विरोध प्रयागराज के अलावा कई शहरों में भी महसूस किया जा सकता है. 'गोधरा वाले पीएम बनने का सपना पाले हुए हैं', 'अफजल हम शर्मिंदा है',तेरे कातिल जिंदा हैं' और 'भारत तेरे टुकड़े होंगे, इंशाल्लाह इंशाल्लाह' जैसे डायलॉग चर्चा का विषय बने हुए हैं।

उर्वशी रौतेला, पीयूष मिश्रा, रवि किशन, सिद्धार्थ बोडके, विजय राज, रश्मि देसाई, अतुल पांडे और शिवज्योति राजपूत जैसे कलाकार इसका हिस्सा हैं। ❐

जी म्यूजिक ने 'एक्सीडेंट और कॉन्सपिरेसी : गोधरा' का 'राम राम' गाना रिलीज किया

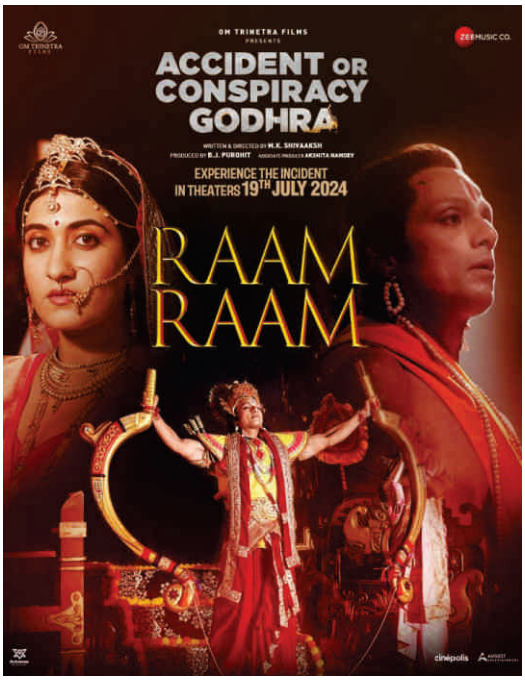

मुंबई ब्यूरो, जी म्यूजिक ने फिल्म 'एक्सीडेंट ऑर कॉन्सपिरेसीः गोधरा' का गाना 'राम राम' रिलीज कर दिया है। इसे दिव्या कुमार और वैशाली मेड ने गाया है और इस खूबसूरत गीत को अमन प्रताप सिंह ने लिखा है, मधुर संगीत वी. रैक्स का है। साबरमती ट्रेन दुर्घटना पर लंबे समय से चली आ रही कहानियों और मान्यताओं को चुनौती देने वाली इस फिल्म का ट्रेलर राकेश वर्मा ने इस गाने की खूबसूरती को बढ़ाया है, जिसने रिलीज के बाद से ही इंडस्ट्री में धूम मचा दी है।

गाने की शुरुआत पृष्ठभूमि में राम लीला मंच से होती है। इसके तुरंत बाद एक ट्रेन में लोगों का एक समूह दिखाया जाता है जहां एक महिला यह राम भजन गा रही है और कोच में अन्य लोग भी उसके साथ आनंद ले रहे हैं और राम भजन का जाप कर रहे हैं। बीच–बीच में राम लीला मंचीय कार्यक्रम भी देखने को मिलते हैं। ऐसा लग रहा है कि राम भक्त या भजन मंडली एक ही ट्रेन में सवार होकर कहीं जा रहे हैं।

यह फिल्म नानावती मेहता आयोग की रिपोर्ट पर आधारित है, जिसे इस घटना की जांच का काम सौंपा गया था। पहली बार कोई ऐसी बॉलीवुड फिल्म बन रही है जो किसी आयोग की रिपोर्ट पर आधारित किसी घटना की सच्चाई दर्शकों को दिखाएगी। फिल्म के निर्माताओं का दावा है कि 'एक्सीडेंट या साजिश गोधरा' ही साबरमती ट्रेन हादसे के पीछे का सच है। इसे देश के सामने उजागर करेंगे। 22 साल पहले गुजरात के गोधरा में हुई इस अमानवीय घटना के पीछे की साजिश की परतें खोलेंगे।

निदेशक एम.के. शिवाक्ष कहते हैं, "गोधरा के निर्देशक के रूप में मेरा लक्ष्य हमेशा इस तबाही के पीछे की असली कहानी को सामने लाना रहा है। मैंने इस फिल्म के माध्यम से दर्शकों को गोधरा कांड की जटिलता और व्यापकता दिखाने का प्रयास किया है। वीडियो उस घटना के पहलुओं की पड़ताल करता है जिसका इस्तेमाल किसी विशेष संप्रदाय को निशाना बनाने के बजाय व्यक्तिगत लाभ के लिए किया गया है और जिसके बारे में लोगों को लगातार गलत जानकारी दी जाती रही है।"

ओम त्रिनेत्र फिल्म्स के बैनर तले बीजे पुरोहित द्वारा निर्मित और एम.के. द्वारा निर्देशित। गीत अमन प्रताप सिंह का है, संगीत वी. रैक्स (राकेश वर्मा) का है। गायक हैं– दिव्या कुमार और वैशाली मेड। फिल्म में हितु कनोडिया, डेनिसा घुमरा, अक्षिता नामदेव, गणेश यादव और राजीव सुरती आदि हैं। फिल्म 19 जुलाई, 2024 को रिलीज होने वाली है। ❐

मेल बॉक्स

बोलो जिंदगी

के पाठक हमसे सीधा सम्पर्क करें।

नीचे दिये गये ई-मेल के माध्यम से
हमे बतायें कि उन्हें कौन सा आलेख
ज्यादा पसंद आया।
क्या कमियां हैं
और उनके क्या सुझाव हैं।

E-mail : bolozindagi@gmail.com